RNI No : CHHHIN/2015/64212 | वर्ष – 03 | अंक – 02 | राजनांदगांव | पृष्ठ 32 आवरण सहित

15 अगस्त – 14 सितंबर, 2017

मूल्य 20 रुपए

नेशन अलर्ट

मासिक पत्रिका

रमन का आईना है छत्तीसगढ़

आपका
नेशन अलर्ट

आप हासिल कर सकते हैं
30% छूट के साथ

हां, मैं नेशन अलर्ट का ग्राहक बनना चाहता/चाहती हूं

टिक करें	अवधि	कुल अंक	कवर मूल्य (रु.)	आपको देना है (रु)	बचत
☐	5 वर्ष	60	1200	840	30%
☐	4 वर्ष	48	960	720	25%
☐	3 वर्ष	36	720	576	20%
☐	2 वर्ष	24	480	408	15%
☐	1वर्ष	12	240	216	10%

अपने पसंद के ऑफर पर निशान लगाएं
और ग्राहकी फार्म भरकर इस पते पर भेजें

नेशन अलर्ट कार्यालय,
प्लॉट नं. 29, विकासनगर, लखोली
राजनांदगांव, छत्तीसगढ़ पिन- 491441

चेक/डीडी से भुगतान

मैं "नेशन अलर्ट" के पक्ष में भेज रहा/रही हूं ..... दिनांक : ..... आहरित बैंक (बैंक का नाम).....
चेक/डीडी नं..... (छत्तीसगढ़ से बाहर के चेक के लिए 50/- रुपए अतिरिक्त दें. ऐट पार चेक के लिए लागू नहीं)

अथवा

"नेशन अलर्ट" के बैंक खाते (युनाईटेड बैंक ऑफ इंडिया, राजनांदगांव : खाता क्रं. 1698050002295)
में अपने नाम से राशि जमा कराएं व हमें सूचित करें।

नाम : ..... पता :.....

शर्त लागू* शहर : ..... जिला : ..... राज्य : ..... पिन नं. : .....

फोन नं. : ..... मोबाइल फोन : ..... ई-मेल : .....

हमसे संपर्क करें

मोबाइल नंबर
97524-11311
97706-56789

E-mail : nationalertcg@gmail.com
Follow Us : www.facebook.com/nationalert

हमसे जुड़ें और रहें अलर्ट
लाईक कीजिए फेसबुक पर नेशन अलर्ट के
पेज को और अपडेट लीजिए खबरों का...

श्री पितृ कृपा से...
मासिक पत्रिका
नेशन अलर्ट
■ वर्ष - 03 ■ अंक - 02 ■ अगस्त 2017 ■ पृष्ठ 32 ■ मूल्य 20 रुपए

संपादक: आशीष शर्मा
परामर्शदाता: जरनैल सिंह भाटिया, अतुल श्रीवास्तव, आशीष दुबे, सैय्यद शोएब अली
कार्यकारी संपादक: श्रीमती नीता शर्मा
सहायक संपादक: विक्रम बाजपेयी
संपादकीय सलाहकार: जयदीप शर्मा
ऑपरेशंस संपादक: अशोक शर्मा
फीचर संपादक: आरती शर्मा, रजनी शर्मा
प्रमुख संवाददाता: श्याम शर्मा, सूरज शर्मा
व्यापारिक प्रतिनिधि : राकेश जैन, तुषार साहू
धर्म-आध्यात्म प्रतिनिधि : त्रिलोक सोनी
डिजाइन: वी उपमन्यु
फोटो: जितेंद्र जैन, मनोज देवांगन
संपादकीय एक्जीक्यूटिव: श्रीमती दीनिता शर्मा
विज्ञापन:
सीनियर जनरल मैनेजर: एडी वैष्णव
जनरल मैनेजर: पंकज महेश्वरी
रीजनल मैनेजर: लोकेश सवाणी
सीनियर मैनेजर: हर्षद कुमार
सर्कुलेशन:
स्टेट हेड: पंकज शर्मा
असिस्टेंट जनरल मैनेजर: राजेश शर्मा
प्रोडक्शन:
सीनियर मैनेजर: प्रेमचंद शर्मा
मैनेजर: तेजस कुमार
स्टेट ब्यूरो
छत्तीसगढ़ : धीरेन्द्र शर्मा
दिल्ली एनसीआर : गौरव तिवारी
मध्यप्रदेश : अनिल शर्मा
महाराष्ट्र : अरुण शर्मा
उड़ीसा : आर शर्मा
आंध्रप्रदेश : राकेश शर्मा
तमिलनाडु : नीरज शर्मा
विधि सलाहकार :
रुपेश दुबे, विमल हाजरा

सभी अवैतनिक*

कार्यालय :
'नेशन अलर्ट' प्लॉट नंबर 29, विकास नगर, लखोली, राजनांदगांव (छत्तीसगढ़)
097706-56789 , 097524-11311, 098271-15077
E-mail : nationalertcg@gmail.com

आंचलिक कार्यालय :
धीरेन्द्र शर्मा, सतीमाता मंदिर के पास, सती बाजार,रायपुर (छत्तीसगढ़)

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक आशीष शर्मा द्वारा श्री बाबा रामदेव प्रिंटर्स, मकान क्रं. 74, वार्ड नं. 37 रानीसागर पूर्व भाग राजनांदगांव छत्तीसगढ़ से मुद्रित कर मकान क्रं. 74, वार्ड नं. 37 रानीसागर पूर्व भाग राजनांदगांव छत्तीसगढ़ से प्रकाशित - संपादक आशीष शर्मा।

■ सभी विवादों का निपटारा राजनांदगांव की सीमा में आने वाली सक्षम अदालतों और फोरमों में किया जाएगा।

इस माह | आवरण कथा

रमन का आईना है छत्तीसगढ़

07 गुजरात

कांग्रेस के लिए गुजरात टेढ़ी खीर

कांग्रेस ने कड़ी टक्कर के बाद ये मैच तो जीत लिया लेकिन विधानसभा चुनाव टेस्ट मैच सरीखे होते हैं. वहां लोगों के धैर्य, स्किल और नेट प्रैक्टिस में बहाए गए पसीने पर परफॉर्मेंस और जीत निर्भर करती है.

13 अर्थशास्त्र

इससे कईयों की 'वाट' लग जाएगी

जियो फोन की लॉन्चिंग के बाद से कुछ लोग बेहद परेशानी में हैं. किन्हें होगा इस फोन से सबसे ज्यादा नुकसान चलिए जानते हैं.

27 स्पोर्ट्स

भुला दिया

भारतीय दल ने अगर दिल्ली एयरपोर्ट पर अपना विरोध न जताया होता तो शायद हर बार की तरह इस बार भी उन्हें भुला दिया गया होता.

20 | बॉलीवुड

हंसाने वाले फिल्मी भूत

एनाबेल क्रिएशन फिल्म सिनेमा हॉल में देखने के बाद मुझे लग रहा है कि भारतीय हॉरर फिल्म और हॉलीवुड की हॉरर फिल्मों में कई ऐसी बातें हैं जो अलग हैं और यकीनन भारतीय हॉरर फिल्में सिर्फ मेरे जैसे लोगों के लिए ही बनाई जाती हैं.

विशेष संपादकीय

विक्रम बाजपेयी

आज़ाद इंसान की जिम्मेदारियां...

ये 71वां मौका है जब हम अपनी आजादी का जश्न मना रहे हैं लेकिन आज भी क्या हम आजादी के मायने समझ पाएं हैं.. मुझे नहीं लगता कि समझ पाएं हैं। स्वतंत्रता का अर्थ जिम्मेदारी से है न कि लापरवाही और सामाजिक जीवन में विसंगतियों से.. इस अंतर को समझना हमारे लिए पहला उद्देश्य होना चाहिए।

आपको आजादी गुलामी से मिली है लेकिन शायद आप भूल रहे हैं कि आज़ाद इंसान के पास कई जिम्मेदारियां होती हैं। इस इक्कीसवीं सदी में जब बात आजादी की निकलती है तो सबसे बड़ा बतगंड़ बनकर सामने आता है अभिव्यक्ति की आजादी का मुद्दा। ये इसलिए क्यूंकि हाल के वक्त तक भारत में लगभग 45 करोड़ आम आदमी इंटरनेट का इस्तेमाल करते हैं।

इनमें एक बड़ा हिस्सा उन लोगों का है जो इसे अपनी अभिव्यक्ति जाहिर करने का जरिया बना चुके हैं लेकिन इनमें कई ऐसे हैं जिन्होंने अब तक इस सुविधा को दूसरों के लिए असुविधा बनाने या फिर 'अभिव्यक्ति की आज़ादी' को प्रदूषित किया है।

भारत उन गिने-चुने देशों में शुमार है जहां के नागरिकों को अधिकतम अधिकार प्राप्त हैं। इंटरनेट भी ऐसा ही एक मुद्दा है। विश्व की दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था वाले चीन में इंटरनेट की सामाग्रियों को लेकर कड़े प्रतिबंध हैं और वहां महज वही सामग्री इंटरनेट पर लोग देख पाते हैं जो वहां की सरकार उन्हें दिखाना चाहती है। ईरान, सऊदी अरब, पाकिस्तान, क्यूबा, बर्मा में भी इंटरनेट पर कड़े सेंसर हैं। नार्थ कोरिया में तो महज 4 फीसद ही लोग हैं जो इंटरनेट का इस्तेमाल कर सकते हैं।

एक तरफ वो देश हैं जो देश विरोधी किसी भी हालात से निपटने के लिए प्रतिबंध से गुरेज नहीं कर रहे हैं तो दूसरी ही तरफ भारत है, जिसने अपने नागरिकों को आलोचना करने के लिए आजादी दे रखी है। क्या यह पहला सबक नहीं है कि इस आजादी कि जिम्मेदारियों को संभालना हमारा कर्तव्य है ?

बहरहाल, कहने को बहुत कुछ है, ये तो बेहद छोटा सवाल है। कई गंभीर मुद्दे हैं, समय पर वो भी सामने आएंगे। अभी तो सिर्फ इतना ही कि अपनी आज़ादी को लापरवाही में न बदलें, इसकी जिम्मेदारियों और अपने कर्तव्यों को समझें, आप महान बनेंगे.. हमारा देश महान बनेगा।

अंत में...
आप सभी को स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएं..

★★★

मिसाल छत्तीसगढ़

आईसीडीएस को लेकर चर्चित संस्था लान्सा की रिपोर्ट में उत्तर प्रदेश और छत्तीसगढ़ के आंकड़ों का फर्क बताता है कि विकेंद्रीकरण कितना प्रभावी हो सकता है...

हेमंत कुमार पाण्डेय

2011 की जनगणना के मुताबिक देश में करीब 13 फीसदी आबादी की उम्र छह साल या इससे कम है. यह आंकड़ा एक ओर जहां दुनिया में सबसे तेजी से बढ़ती हुई अर्थव्यवस्थाओं में शुमार भारत के लिए उम्मीदें पैदा करता दिखता है, वहीं इसके साथ जुड़ी एक बड़ी चुनौती भी है. चुनौती यह कि आने वाले दिनों में आबादी का यह बड़ा हिस्सा कहीं फायदा पहुंचाने की बजाय देश पर बोझ ही न बन जाए. इसकी वजह है कुपोषण और तरह-तरह की बीमारियां.

इसे ध्यान में देखते हुए ही 1975 में गर्भवती महिलाओं और छह साल तक के बच्चों के समग्र विकास के लिए एकीकृत बाल विकास योजना (आईसीडीएस) की शुरूआत की गई थी. इसका मकसद है बच्चों को पौष्टिक खाना देने के साथ-साथ रोगों से बचाव के लिए उनका समय-समय पर टीकाकरण. इसके अलावा योजना के तहत बच्चों को स्कूली पढ़ाई के लिए भी तैयार किया जाता है. केंद्र प्रायोजित इस योजना के कार्यान्वयन की जिम्मेदारी राज्य सरकारों के कंधे पर डाली गई है.

हाल में अंतरराष्ट्रीय रिसर्च संस्था लेवरेजिंग एग्रीकल्चरल फॉर न्यूट्रिशन इन साउथ एशिया (लान्सा) ने उत्तर प्रदेश और छत्तीसगढ़ में इस योजना का कार्यान्वयन और इसके नतीजे परखने की कोशिश की. संस्था ने उत्तर प्रदेश के लखनऊ और छत्तीसगढ़ के रायपुर स्थित छह-छह गांवों का जायजा लिया और अधिकारियों, सिविल सोसायटी के प्रतिनिधियों और आईसीडीएस के कर्मियों से बातचीत के आधार पर अपनी रिपोर्ट तैयार की. इस रिपोर्ट से साफ होता है कि कैसे सरकार की सक्रियता के साथ-साथ स्थानीय समुदाय की जागरूकता और भागीदारी किसी योजना की सफलता में अहम भूमिका निभा सकती है.

छत्तीसगढ़ इस महत्वाकांक्षी योजना के ठीक से कार्यान्वयन में कहीं आगे दिखता है चाहे मामला आंगनबाड़ी केंद्रों में बुनियादी सुविधाओं का हो या फिर इसकी गुणवत्ता का. रिपोर्ट में यह बात सामने आई है कि रायपुर जिले में आंगनबाड़ी केंद्र तय वक्त पर खुलते हैं. इसके अलावा स्थानीय संस्थाओं के साथ-साथ सरकारी विभागों में भी इस योजना को लेकर सक्रियता और जिम्मेदारी नजर आती है. रिपोर्ट के मुताबिक सूबे में आंगनबाड़ी केंद्रों के लिए बच्चों के लिए अनाज या फिर बने-बनाए खाने की जिम्मेदारी स्थानीय महिलाओं के समूहों को दी गई है. इसके चलते योजना में लोगों की भागीदारी भी बढ़ी है और उनमें इसे लेकर जिम्मेदारी का भाव भी. योजना ठीक से चले, इसके लिए इस पर स्थानीय लोगों की निगाह बनी रहती है.

आईसीडीएस के संबंध में छत्तीसगढ़ का उदाहरण बताता है कि योजनाओं के कार्यान्वयन को विकेंद्रीकृत कर सामुदायिक भागीदारी के जरिए किस तरह अच्छे नतीजे हासिल किए जा सकते हैं. हालांकि, गांवों में राजनीतिक-आर्थिक और सामाजिक रूप से सशक्त लोगों के हाथ में इसकी लगाम आने से कमजोर तबके के इस योजना के लाभों से वंचित होने की आशंका भी पैदा होती है. लेकिन सरकार की प्रभावी निगरानी इसे रोक सकती है.

बेहतर नतीजे हासिल करने के रास्ते

लान्सा की रिपोर्ट में दोनों राज्यों में योजना के जमीनी हालात की जानकारी देने के साथ आने वाले वक्त में इसे और अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए कुछ रास्ते भी बताए गए हैं. पहले उत्तर प्रदेश की बात करते हैं. रिपोर्ट का मानना है कि सूबे में इस योजना के तहत सबसे जरूरी बात बुनियादी सुविधाओं तक लाभार्थियों की पहुंच सुनिश्चित कराना है.

योगी आदित्यनाथ सरकार इस दिशा में कदम बढ़ाती हुई दिख रही है. इसने अपने पहले बजट (2017-18) में चरणबद्ध तरीके से सूबे के गांवों को कुपोषण मुक्त गांव बनाने का लक्ष्य रखा है. सरकार ने राशन के वितरण व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने की बात कही है. इसके अलावा कुपोषण से निपटने के लिए एक नई योजना शबरी संकल्प अभियान लाने की तैयारी की जा रही है. इसके तहत गर्भवती महिलाओं और पांच साल तक के कुपोषित बच्चों को अतिरिक्त पोषाहार दिया जाएगा.

दूसरी ओर छत्तीसगढ़ के बारे में रिपोर्ट का कहना है कि इस योजना के जरिए अब तीन साल तक के बच्चों के अच्छे स्वास्थ्य और पोषण सुनिश्चित करने का काम करना चाहिए. साथ ही नए आंगनबाड़ी केंद्रों की स्थापना के साथ इनमें फैली हुई असमानता को खत्म करने की जरूरत है. छत्तीसगढ़ सरकार ने साल 2017-18 के बजट में आईसीडीएस के लिए 16,745 करोड़ रुपए आवंटित किए हैं. बीते साल यह आंकड़ा 14,850 करोड़ था.

लान्सा रिपोर्ट की पुष्टि नेशनल फैमिली हैल्थ सर्वे-4 भी करता दिखता है

लान्सा ने यह सर्वे दोनों राज्यों के सिर्फ छह-छह गांवों में किया था, इसलिए इस रिपोर्ट की विश्वसनीयता पर सवाल उठाए जा सकते हैं. लेकिन नेशनल फैमिली हैल्थ सर्वे (एनएफएचएस-4, 2015-16) भी इसकी काफी हद तक पुष्टि करता है. एनएफएचएस के मुताबिक छत्तीसगढ़ में बीते एक दशक के दौरान नवजात और शिशु (पांच साल से कम) मृत्यु दर में काफी कमी आई है. साल 2005-06 में वहां नवजात मृत्यु दर 71 प्रति हजार थी. 2015-16 यह आंकड़ा गिरकर 54 पर आ गया. शिशु मृत्यु दर की बात करें तो इसमें भी काफी कमी दर्ज की गई है. साल 2005-06 में 90 प्रति हजार के मुकाबले यह 2015-16 में यह घटकर 64 रह गई है.

दूसरी ओर, उत्तर प्रदेश में भी इन मामलों में सुधार तो दिख रहा है लेकिन, इसकी गति छत्तीसगढ़ की तुलना में धीमी है. सूबे में 2015-16 में नवजात मृत्यु दर 64 प्रति हजार थी. 2005-06 में यह आंकड़ा 73 था. बीते दशक के दौरान शिशु मृत्यु दर के मामलों में भी कमी दर्ज की गई है. 2005-06 में 96 प्रति हजार की तुलना में 2015-16 में यह आंकड़ा 78 रह गया है.

सब्सिडी अब खतरा बनती जा रही है

एक शोध के मुताबिक किसानों को दी जाने वाली बिजली सब्सिडी से सरकारी खजाने पर तो बोझ बढ़ ही रहा है, यह भूजल स्तर में गिरावट की प्रमुख वजह भी बन रही है...

देश के हर राज्य में बिजली सब्सिडी एक बड़ा चुनावी मुद्दा बनती रही है. पंजाब, उत्तरप्रदेश, बिहार और महाराष्ट्र जैसे राज्यों में इसने कई बार सरकार बनवाने में अहम भूमिका निभाई है. हालांकि, समय-समय पर पर्यावरण विशेषज्ञ अपने अध्ययन का हवाला देकर सरकारों को इसे लेकर चेताते रहे हैं. हाल में पंजाब में किए गए एक ऐसे ही नए अध्ययन से पता चला है कि भूजल में गिरावट के लिए किसानों को दी जाने वाली बिजली सब्सिडी काफी हद तक जिम्मेदार है.

इस अध्ययन में गिरते भूजल स्तर का सीधा संबंध फसल पद्धति से पाया गया है. इसके मुताबिक राज्य में भूमिगत जल स्तर पर गहराते संकट के लिए धान की फसल सबसे अधिक जिम्मेदार है. धान की खेती में सबसे अधिक पानी का उपयोग होता है. इसमें गन्ने के मुकाबले 45 प्रतिशत और मक्के की अपेक्षा 88 प्रतिशत तक अधिक भूजल की खपत होती है. अध्ययन में सामने आया है कि बिजली पर सब्सिडी मिलने के कारण किसान चावल की फसल का रकबा बढ़ाते जा रहे हैं. शोधकताओं के मुताबिक 1980-81 में पंजाब में चावल की खेती 18 प्रतिशत क्षेत्र में ही होती थी, लेकिन राज्य सरकार द्वारा भारी सब्सिडी देने की घोषणा के बाद 2012-13 में इसमें 36 प्रतिशत तक बढ़ोतरी हो गई.

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद से सम्बद्ध राष्ट्रीय कृषि आर्थिकी एवं नीति अनुसंधान संस्थान, केंद्रीय समुद्री मत्स्य अनुसंधान संस्थान और नीति आयोग के अध्ययनकताओं द्वारा किया गया यह अध्ययन हाल में करंट साइंस शोध पत्रिका में प्रकाशित किया गया है. इंडिया साइंस वायर के मुताबिक अध्ययनकताओं का कहना है कि फसल उत्पादन में प्रति घन मीटर खर्च होने वाले पानी के लिहाज से देखें तो अन्य फसलों की अपेक्षा चावल की खेती पंजाब के पारीस्थितिकी तंत्र के बिलकुल भी मुफीद नहीं है और इसीलिए राज्य के किसानों को चावल से ज्यादा अन्य फसलों को तरजीह देनी चाहिए.

अध्ययनकताओं की टीम में शामिल डॉ. शिवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव ने इंडिया साइंस वायर को बताया, ह्यपिछले कुछ वर्षों में पंजाब की फसल पद्धति में बदलाव देखने को मिला है और चावल की खेती के साथ-साथ भूमिगत जल पर किसानों की निर्भरता तेजी से बढ़ी है. सिंचाई के लिए भूजल की उपलब्धता के साथ-साथ ज्यादा पैदावार, समर्थन मूल्य, बेहतर बाजार और खासतौर पर मुफ्त बिजली मिलने से किसान इस गैर-परंपरागत फसल की ओर ज्यादा आकर्षित हुए हैं.ह्व

हालांकि, राज्य सरकार ने भविष्य में भूजल के स्तर में गिरावट से चिंतिति होकर ही 2009 में भूमिगत जल के उपयोग के नियमन के लिए कानून भी बनाया था. लेकिन, इस पर सख्ती से अमल नहीं किया गया. इस वजह से इस नियम के बावजूद जलस्तर में गिरावट लगातार जारी है. हालांकि, अध्ययनकताओं का मानना है कि अगर अभी भी सरकार इस कानून का गंभीरता से पालन करवाए तो राज्य के जलस्तर में वृद्धि हो सकती है.

बिजली सब्सडिी से सरकारी खजाने पर पड़ने वाले बोझ की बात करें तो पंजाब सरकार ने 1997 में किसानों के लिए बिजली सब्सिडी की योजना शुरू की थी. बताया जाता है कि इसके बाद 2016-17 में राज्य सरकार का ऊर्जा सब्सिडी बिल 5,600 करोड़ रुपये रहा. मौजूदा वित्त वर्ष में यह बढ़कर 10 हजार करोड़ रुपये हो गया है. इसमें बिजली के लिए कृषि क्षेत्र को दी जाने वाली सर्वाधिक 7,660 करोड़ रुपये की रियायत शामिल है.

अध्ययनकताओं के अनुसार अगर पंजाब सरकार बिजली सब्सिडी बंद करती है तो भूजल के दीर्घकालिक उपयोग और राज्य की खस्ता आर्थिक हालत दोनों को दुरुस्त करने में मदद मिल सकती है. इन लोगों का कहना है कि इससे किसानों की आय जरूर कुछ कम हो सकती है, पर फसलों पर होने वाला उनका मुनाफा बना रहेगा. सरकार द्वारा सामुदायिक सिंचाई यंत्रों की स्थापना के साथ-साथ भूजल बाजार को बढ़ावा देने से भी किसान किफायती तरीके से भूमिगत जल के उपयोग के लिए प्रेरित हो सकते हैं.

कांग्रेस के लिए गुजरात टेढ़ी खीर

कांग्रेस ने कड़ी टक्कर के बाद ये मैच तो जीत लिया लेकिन विधानसभा चुनाव टेस्ट मैच सरीखे होते हैं. वहां लोगों के धैर्य, स्किल और नेट प्रैक्टिस में बहाए गए पसीने पर परफॉर्मेंस और जीत निर्भर करती है.

साहिल जोशी

हाल ही में खत्म हुआ राज्यसभा चुनाव कांग्रेस नेता अहमद पटेल के लिए टी20 मैच की तरह था जिसमें जीत किसकी होगी इसकी भविष्यवाणी नामुमकिन थी. लेकिन फिर भी इस मैच के मैन ऑफ मैच खुद पटेल नहीं थे बल्कि गुजरात विधानसभा में विपक्ष के नेता शक्तिसिंह गोहिल थे. जिन्होंने समय रहते शंकर सिंह वाघेला के दो समर्थकों द्वारा किए गए घपले पर उंगली उठाई थी.

गांधीनगर के स्वर्णिम संकुल के बाहर कांग्रेस के विधायकों का जश्न देखने लायक था. जिन 43 विधायकों ने पटेल को जीताने में अंत तक कांग्रेस का साथ दिया उन्हें अच्छे से पता था कि अहमद पटेल की हार कांग्रेस समर्थकों के मनोबल को गिरा देता जो आने वाले विधानसभा चुनावों में घातक साबित होती. कई सालों बाद लोगों ने राज्य के कांग्रेस नेतृत्व को एकजुट होते देखा. ऐसे में अहमद पटेल की ये जीत पार्टी के भविष्य के लिए बहुत मायने रखती है. लेकिन ये भी नहीं भूलना चाहिए कि विधानसभा चुनाव और राज्यसभा चुनावों में जमीन आसमान का अंतर होता है.

कांग्रेस ने कड़ी टक्कर के बाद ये मैच तो जीत लिया लेकिन विधानसभा चुनाव टेस्ट मैच सरीखे होते हैं. वहां लोगों के धैर्य, स्किल और नेट प्रैक्टिस में बहाए गए पसीने पर परफॉर्मेंस और जीत निर्भर करती है. हालांकि बीजेपी राज्यसभा में मात खा गई है लेकिन विधानसभा चुनावों के लिए वो कमर कसकर तैयार हैं. वहीं कांग्रेस में अभी तैयारी का आभाव है.

कठिन है डगर जीत की

बाहर से देखने पर ये कहा जा सकता है कि कांग्रेस

के लिए ये बेस्ट समय है जब वो विधानसभा चुनावों में बीजेपी को मात दे सकती है. यही वो समय है जिसका इंतजार कांग्रेस 20 सालों से कर रही थी. बीजेपी के पास राज्य में पार्टी और सरकार का नेतृत्व करने के लिए कोई बड़ा नाम नहीं है. नरेंद्र मोदी और अमित शाह के दिल्ली शिफ्ट हो जाने से बीजेपी के स्थानीय नेताओं का सामना करना आसान है. 2007 के बाद से मोदी जो नेतृत्व बीजेपी को प्रदान कर रहे थे उसका अब पार्टी में अभाव है और मुख्यमंत्री विजय रुपानी में नरेंद्र मोदी की तरह का आकर्षण नहीं है.

केंद्र में बीजेपी की सरकार होने के बाद अब ये लोग 'गुजराती अस्मिता' नारा भी नहीं दे सकते जिसके बल पर वो केंद्र में कांग्रेस की सरकार के समय चुनावों में उतरते रहे हैं. साथ ही हार्दिक पटेल और दलित नेता जिग्नेश मेवानी जैसे लोगों के उदय ने बीजेपी की डगर और कठिन कर दी है. इतना साफ मैदान होने के बावजूद कांग्रेस के लिए गुजरात में जीतना आसान नहीं होगा.

स्थानीय चुनावों में बीजेपी को बढ़त मिली थी. भले ही कांग्रेस ने जिला पंचायत चुनावों में 31 में से 23 सीटों और पंचायत चुनावों में 193 में से 113 सीटों पर जीत दर्ज की थी लेकिन शहरी मतदाताओं पर बीजेपी का डंका बोलता है. अहमदाबाद, सूरत, राजकोट, वडोदरा, भावनगर और जामनगर में म्यूनसिपालटी चुनावों में बीजेपी ने न सिर्फ बड़ी जीत दर्ज की थी बल्कि छोटे शहरों के 56 में से 40 सीटों पर भी कब्जा कर लिया था. विधानसभा के 182 सीटों में से 67 शहरी सीटों और 20 छोटे शहरी सीटों के साथ जीत अभी भी कांग्रेस की झोली से दूर ही दिखाई देती है.

2012 के विधानसभा चुनावों में 71.32 प्रतिशत मतदान हुआ था और इसमें शहरी क्षेत्रों में बीजेपी का ही परचम लहराया था. सूरत में बीजेपी ने 16 में से 15 सीटों पर जीत दर्ज की थी. अहमदाबाद के 17 में से 15 सीटों और राजकोट के 4 में से 3 सीटों पर जीत दर्ज की थी. गांधीनगर की दोनों सीटों, वडोदरा के पांचों सीट और भावनगर के दोनों सीटों पर भी बीजेपी ने ही जीत दर्ज की थी.

शहरी वोटरों ने दिखा दिया था कि वो बीजेपी से ज्यादा मोदी के आकर्षण पाश में बंधे हैं. हालांकि आदिवासी क्षेत्रों में बीजेपी को 41 में से सिर्फ 18 सीटें ही मिली थीं. वहीं कांग्रेस ने क्षत्रिय, हरीजन, आदिवासी और मुस्लिम वोट बैंक को अपने साथ बांधे रखने में सफलता जरुर पाई थी. लेकिन बीजेपी का साथ पटेल समुदाय ने खुलकर दिया था.

2012 के चुनावों में मोदी ने विकास का एजेंडा अपनाया था और शहरी लोगों ने इसका साथ दिया था. माना जा रहा है कि इस बार भी बीजेपी इसी मुद्दे को भुनाने की कोशिश करेगी. राज्य के उत्तरी इलाकों में बाढ़ के कहर के बाद ये साफ देखा जा सकता है कि टीवी पर राज्य सरकार अपने द्वारा किए गए कामों का खुब प्रचार कर रही है. इसके जरिए वो राज्य की शहरी जनता को संदेश देना चाह रहे हैं कि मोदी के पीएम बनने के बाद भी राज्य बीजेपी में वही जज्बा कायम है.

मोदी ने भी चुनाव प्रचार शुरू कर दिया है. सूरत और राजकोट में कुछ महीने पहले किए गए अपने रैली के द्वारा मोदी राज्य की जनता तक ये संदेश पहुंचाना चाह रहे हैं कि गुजरात अभी भी उनके लिए महत्वपूर्ण है. और प्रदेश के प्रति अपने उत्तरदायित्व को हर संभव निभाएंगे.

दूसरी तरफ कांग्रेस अभी भी राज्य में बीजेपी को मात देने के लिए एक रणनीति खोज रही है. वो ग्रामीण क्षेत्रों को अपने साथ रखने के लिए हरसंभव प्रयास कर रहे हैं. लेकिन शहरी मतदाताओं को रिझाने के लिए अभी भी उनके पास कोई प्लान नहीं है. और यही शहरी मतदाता चुनाव में महत्वपूर्ण कड़ी साबित होंगे.

एकता के प्रतीक

बाबा रामदेव पीर

हिंदू-मुस्लिम एकता के प्रतीक बाबा रामदेव ने अपने अल्प जीवन के तेंतीस वर्षों में वह कार्य कर दिखाया जो सैकडो वर्षों में भी होना सम्भव नही था। सभी प्रकार के भेद-भाव को मिटाने एवं सभी वर्गों में एकता स्थापित करने की पुनीत प्रेरणा के कारण बाबा रामदेव जहाँ हिन्दुओ के देव है तो मुस्लिम भाईयों के लिए रामसा पीर। मुस्लिम भक्त बाबा को रामसा पीर कह कर पुकारते हैं। वैसे भी राजस्थान के जनमानस में पाँच पीरों की प्रतिष्ठा है जिनमे बाबा रामसा पीर का विशेष स्थान है।

पाबू हडू रामदे ए माँगाळिया मेहा।
पांचू पीर पधारजौ ए गोगाजी जेहा।।

बाबा रामदेव ने छुआछूत के खिलाफ कार्य कर सिर्फ दलितों का पक्ष ही नही लिया वरन उन्होंने दलित समाज की सेवा भी की। डाली बाई नामक एक दलित कन्या का उन्होंने अपने घर बहन-बेटी की तरह रख कर पालन-पोषण भी किया। यही कारण है आज बाबा के भक्तो में एक बहुत बड़ी संख्या दलित भक्तों की है। बाबा रामदेव पोकरण के शासक भी रहे लेकिन उन्होंने राजा बनकर नही अपितु जनसेवक बनकर गरीबों, दलितों, असाध्य रोगग्रस्त रोगियों व जरुरत मंदों की सेवा भी की। यही नही उन्होंने पोकरण की जनता को भैरव राक्षक के आतंक से भी मुक्त कराया। प्रसिद्ध इतिहासकार मुंहता नैनसी ने भी अपने ग्रन्थ ख्मारवाड़ रा परगना री विगतख् में इस घटना का जिक्र करते हुए लिखा है- भैरव राक्षस ने पोकरण नगर आतंक से सुना कर दिया था लेकिन बाबा रामदेव के अदभूत एवं दिव्य व्यक्तित्व के कारण राक्षस ने उनके आगे आत्म-समर्पण कर दिया था और बाद में उनकी आज्ञा अनुसार वह मारवाड़ छोड़ कर चला गया। बाबा रामदेव ने अपने जीवन काल के दौरान और समाधि लेने के बाद कई चमत्कार दिखाए जिन्हें लोक भाषा में परचा देना कहते है। इतिहास व लोक कथाओं में बाबा द्वारा दिए ढेर सारे परचों का जिक्र है। जनश्रुति के अनुसार मक्का के मौलवियों ने अपने पूज्य पीरों को जब बाबा की ख्याति और उनके अलौकिक चमत्कार के बारे में बताया तो वे पीर बाबा की शक्ति को परखने के लिए मक्का से रुणिचा आए। बाबा के घर जब पांचो पीर खाना खाने बैठे तब उन्होंने बाबा से कहा की वे अपने खाने के बर्तन (सीपियाँ) मक्का ही छोड़ आए है और उनका प्रण है कि वे खाना उन सीपियों में खाते है तब बाबा रामदेव ने उन्हें विनयपूर्वक कहा कि उनका भी प्रण है कि घर आए अतिथि को बिना भोजन कराये नही जाने देते और इसके साथ ही बाबा ने अलौकिक चमत्कार दिखाया जो सीपी जिस पीर कि थी वो उसके सम्मुख रखी मिली।

इस चमत्कार (परचा) से वे पीर इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने बाबा को पीरों का पीर स्वीकार किया। जन-जन की सेवा के साथ सभी को एकता का पाठ पढाते बाबा रामदेव ने भाद्रपद शुक्ला एकादशी वि.स . 1442 को जीवित समाधी ले ली। श्री बाबा रामदेव जी की समाधी संवत1442 को रामदेव जी ने अपने हाथ से श्रीफल लेकर सब बड़े बुढ़ों को प्रणाम किया तथा सबने पत्र पुष्प चढ़ाकर रामदेव जी का हार्दिक तन मन व श्रद्धा से अन्तिम पूजन किया। रामदेव जी ने समाधी में खड़े होकर सब के प्रति अपने अन्तिम उपदेश देते हुए कहा 'प्रति माह की शुक्ल पक्ष की दूज को पूजा पाठ, भजन कीर्तन करके पर्वोत्सव मनाना, रात्रि जागरण करना। प्रतिवर्ष मेरे जन्मोत्सव के उपलक्ष में तथा अन्तर्ध्यान समाधि होने की स्मृति में मेरे समाधि स्तर पर मेला लगेगा।

मेरे समाधी पूजन में भ्रान्ति व भेद भाव मत रखना। मैं सदैव अपने भक्तों के साथ रहूँगा। इस प्रकार श्री रामदेव जी महाराज ने समाधि ली।' आज भी बाबा रामदेव के भक्त दूर- दूर से रुणिचा उनके दर्शनार्थ और अराधना करने आते है। वे अपने भक्तों के दुःख दूर करते हैं, मुराद पूरी करते हैं। हर साल लगने मेले में तो लाखों की तादात में जुटी उनके भक्तो की भीड़ से उनकी महत्ता व उनके प्रति जन समुदाय की श्रद्धा का आकलन आसानी से किया जा सकता है।

विपक्ष और इनके ये नेता न जाने क्या करेंगे ?

ये तो ठीक है कि मोदी अपने सारथी अमित शाह के साथ रथ पर सवार हैं, लेकिन मुकाबले के लिए कोई तो सामने से टक्कर देने वाला होगा. जोरदार न सही, धीरे से ही सही. सवाल यही है कि वो कौन होगा ?

तीन साल बीत चुके हैं पर 'देश का मिजाज' अब भी 'मोदी-मोदी' ही है. ये बात इंडिया टुडे के ताजा ओपिनियन पोल में सामने आयी है. देश के 19 राज्यों में हुए इस सर्वे में 97 संसदीय सीटों के 194 विधानसभा क्षेत्रों के 12,178 लोगों को शामिल किया गया. सर्वे के हिसाब से देखें तो अभी चुनाव होने पर एनडीए को 349 सीटें, यूपीए को 75 और बाकियों को 119 सीटें मिल सकती हैं.

12 से 23 जुलाई के बीच हुए इस सर्वे में ममता बनर्जी देश भर में सबसे बेहतरीन काम करने वाली मुख्यमंत्री के तौर पर उभरकर सामने आई हैं. सर्वे में शामिल 12 फीसदी लोगों ने उन्हें पसंद किया है.

ये तो ठीक है कि मोदी अपने सारथी अमित शाह के साथ रथ पर सवार हैं, लेकिन मुकाबले के लिए कोई तो सामने से टक्कर देने वाला होगा. जोरदार न सही, धीरे से ही सही. सवाल यही है कि वो कौन होगा ?

ममता बनर्जी

पिछले साल के विधानसभा चुनावों से ही शारदा और नारदा स्कैम ममता बनर्जी का पीछा नहीं छोड़ रहे हैं, फिर भी उनकी छवि बेदाग बनी हुई है. वो लगातार जीतती आ रही हैं. चाहे उपचुनाव हो या नगर महापालिकाओं के या फिर पंचायत चुनाव, हर मैदान में वो विरोधियों को शिकस्त देकर साबित करती आ रही हैं कि अभी तो वही बेस्ट हैं. इसी साल जनवरी में हुए सर्वे में ममता के कामकाज की रेटिंग नीतीश कुमार से नीचे थी, पर अब तो वो सबको पछाड़ कर आगे निकल गयी हैं.

- **ममता जैसा कौई नहीं !**

हां, पश्चिम बंगाल में ममता के लिए खतरे की बात ये जरूर है कि बीजेपी लगातार मजबूत होती दिख रही हैं. ताजा चुनावों के नतीजे भी इसी बात की पुष्टि करते हैं. ऐसा लगता है जैसे लेफ्ट और कांग्रेस के परंपरागत वोट तृणमूल को मिल तो रहे हैं, लेकिन बीजेपी के खाते में भी छिटक कर चले जा रहे हैं.

नीतीश के बीजेपी से हाथ मिला लेने के बाद ममता विपक्षी खेमे में उस जगह को भरने की कोशिश कर रही हैं. हालांकि, ममता बनर्जी चाहती हैं कि दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को भी संभावित विपक्षी महागठबंधन में जगह दी जाए. 2019 की बात और है, हो सकता है तब तक मोदी को टक्कर देने वाला कोई अन्य नेता मजबूती से खड़ा हो जाए, लेकिन फिलहाल तो ममता का कोई सानी नहीं दिखता.

अरविंद केजरीवाल

साझी विरासत बचाओ सम्मेलन में बुलाए गये लोगों में अरविंद केजरीवाल का जिक्र तो नहीं आया था लेकिन शरद यादव का कहना था कि विपक्ष में कोई ऐसा नहीं है जिसे न बुलाया गया हो. वैसे ये बात शरद यादव ने नीतीश कुमार का प्रसंग आने पर कही थी. फिर भी अरविंद केजरीवाल नजर नहीं आये. बाकियों में तो जयंत चौधरी से लेकर बाबूलाल मरांडी तक पहुंचे हुए थे. वैसे भी जिस तरह कांग्रेस पूरे लाव लश्कर के साथ पहुंची थी, शरद यादव होस्ट कम और रस्मी संयोजक ज्यादा लग रहे थे. केजरीवाल के नहीं होने की वजह भी शायद यही रही होगी.

- **आखिर अछूत कब तक ?**

विपक्षी खेमे में केजरीवाल की पैरवी अकेले ममता कर रही हैं. ममता का तर्क है कि बीजेपी को टक्कर देने के लिए जब वो लेफ्ट से परहेज छोड़ सकती हैं तो केजरीवाल को लेकर कांग्रेस ऐसा क्यों नहीं कर सकती.

राहुल गांधी भले ही मोदी पर लगातार हमलावर रहते हों लेकिन नीतीश के बाद केजरीवाल ही ऐसे हैं जो बीजेपी और संघ से सख्त लहजे में पेश आते हैं. ऐसे में अगर ममता या किसी और पर बात नहीं बनी तो केजरीवाल भी विपक्षी खेमे में टक्कर देने वालों की रेस में आगे हो सकते हैं.

शरद यादव

कहने को तो शरद यादव के पास अब वो भी नहीं है जो उनका हुआ करता था. पार्टी के नाम पर जेडीयू और मोदी सरकार की ओर से ऑफर किया गया केंद्र में मंत्री पद. राज्यसभा में नेता तो अब रहे नहीं सदस्यता पर भी तलवार लटक ही रही है. फिर भी शरद यादव मैदान में डटे हुए हैं तो उसकी एक ही वजह है - नीतीश की मुखालफत के जरिये प्रधानमंत्री मोदी का विरोध.

- **साथ तो है, पर विकास नहीं...**

शरद ने साझी विरासत बचाओ के बहाने महफिल तो अच्छी सजायी थी, लेकिन वहां जुटे ज्यादातर कवियों का हाल ऐसा ही है कि आपस में तो एक दूसरे

को दाद दे लेते हैं, बाहर उन्हें कोई पूछने वाला नजर नहीं आता. कहने को कांग्रेस का आभामंडल और लालू का जनाधार जरूर शरद यादव के सपोर्ट में खड़ा है लेकिन अपनों से ही जूझते अखिलेश यादव, जमीन खो चुकीं मायावती और कमजोर पड़ चुके वाम दलों के बूते वो कैसे मजबूत हो पाएंगे.

अगर कोई महागठबंधन बनता है तो 2019 में परिवार के मुखिया के नाते भले ही उन्हें नेता बना दिया जाये, लेकिन हासिल क्या और कितना होगा कहना मुश्किल है.

तेजस्वी यादव

डिप्टी सीएम की कुर्सी छिन जाने के बाद से तेजस्वी यादव सड़क पर आ गये हैं. नीतीश कुमार के आतंक को साबित करने के लिए वो रात रात भर स्टेशन के पास सड़क पर ही गुजार दे रहे हैं. फिलहाल वो नीतीश के खिलाफ जनादेश अपमान यात्रा पर निकले हुए हैं.

2019 में तेजस्वी यादव की कोई राष्ट्रीय पोजीशन तो नहीं होगी लेकिन बिहार में विपक्ष का एक चेहरा तो होंगे ही.

अखिलेश यादव

यूपी की हार को लेकर लंबे आत्ममंथन के बाद अखिलेश बालकनी से दिखायी तो दे रहे हैं लेकिन जलते मुद्दों पर भी बड़े बेमन से नजर आते हैं. गोरखपुर अस्पताल में बच्चों की मौत पर जिस तरीके से योगी सरकार फंसी है, अखिलेश यादव चाहते तो कठघरे में खड़ा कर सकते थे - लेकिन मुआवजा मांग कर रस्म निभा ली. हो सकता है कि जिन बातों पर सवाल उठ रहे हैं उनकी नींव तो उन्हीं के शासन में रखी गयी थी.

योगी सरकार को सत्ता संभाले तीन महीने से ज्यादा हो चुके हैं, लेकिन अब तक ऐसा एक बार भी नहीं महसूस हुआ कि यूपी में विपक्ष नाम की कोई चीज भी है. लगता है शिवपाल यादव का बार बार सेक्युलर मोर्चा बनाने की धमकी उन्हें पहले के मुकाबले ज्यादा परेशान करने लगी है. फिर 2019 में कितनी उम्मीद की जाये?

मायावती

ये सही है कि लोक सभा में बीएसपी का कोई सांसद नहीं है, यूपी विधानसभा में भी महज 19 विधायक हैं और राज्य सभा से मायावती के इस्तीफे के बाद उनकी पार्टी की हालत पतली है, लेकिन एक बड़ा सच ये भी है कि अब भी उनका वोट प्रतिशत सिफर नहीं हुआ है. यही वजह है कि संघ और बीजेपी को टक्कर देने की रणनीति पर काम कर रहे नेता मानने को तैयार नहीं हैं कि मायावती और अखिलेश कांग्रेस के साथ मिलकर चुनाव मैदान में उतरें तो तस्वीर अलग नहीं होगी.

- **कुछ बात है कि हस्ती...**

अखिलेश और मायावती दोनों साथ आने की बात तो कह रहे हैं लेकिन फसाने को हकीकत में बदलते देखने को मिले तभी कुछ कहा भी जा सकता है. मायवती के सबसे बड़े सिरदर्द फिलहाल उनके पुराने सहयोगी नसीमुद्दीन सिद्दीकी बने हुए हैं. सिद्दीकी बीएसपी के सारे पुराने दलित और मुस्लिम नेताओं को एकजुट कर मायवती को किनारे लगाने के मिशन में जुटे हुए हैं. माना जा रहा है कि नसीमुद्दीन को अंदर ही अंदर बीजेपी का भी समर्थन हासिल है. नसीमुद्दीन फिलहाल 16 संगठनों को मिलाकर नेशनल बहुजन अलाएंस खड़ा करने में जुटे हुए हैं. सवाल ये है कि क्या मायावती इतना सब कुछ आसानी से होने देंगी? कुछ बात तो है कि हस्ती मिटती नहीं, 2019 में मायावती की बड़ी भूमिका को नकारना बुद्धिमानी की बात नहीं होगी.

नवीन पटनायक

नवीन पटनायक की मुश्किल ये है कि उत्तर भारत में उनकी स्वीकार्यता नहीं के बराबर है - और बीजेपी कहर बन कर उन पर टूट पड़ी है. ओडिशा में बीजेपी का - 'मेरा बूथ सबसे मजबूत' कार्यक्रम उनका सिरदर्द बन चुका है और यही वजह है कि पार्टी का सारा काम भी वो खुद ही देखने लगे हैं. बहुत मजबूत भले न हों, 2019 में नवीन पटनायक भी तो विपक्षी खेमे में एक खंभा हो ही सकते हैं.

माणिक सरकार माणिक सरकार को देश के सबसे गरीब मुख्यमंत्री होने का रुतबा हासिल है. स्वतंत्रता दिवस के मौके पर आकाशवाणी और दूरदर्शन द्वारा त्रिपुरा के मुख्यमंत्री का भाषण न दिखाये जाने को लेकर हाल ही में सुर्खियों में बने हुए थे.

माणिक सरकार का आरोप है कि दूरदर्शन और आकाशवाणी ने स्वतंत्रता दिवस के मौके पर उनका भाषण प्रसारित करने से मना कर दिया. माणिक सरकार के मुताबिक प्रसार भारती ने पत्र लिखकर उनके भाषण में बदलाव करने को कहा था, जिसे उन्होंने नामंजूर कर दिया. फिर भाषण का प्रसारण काट-छांट कर किया गया.

माणिक सरकार विपक्षी खेमे में 2019 में कोई कद्दावर पोजीशन हासिल कर पाएंगे ये उम्मीद करना तो ठीक नहीं होगा, लेकिन क्या पता कब किसी की किस्मत एचडी देवगौड़ा जैसी बुलंद हो जाये.

...और आखिर राहुल गांधी

अब तक राहुल गांधी ही एक ऐसा नाम है जो घोषित तौर पर 2019 की अंतरिक्ष की कक्षा में स्थापित हैं. सोनिया की तबीयत बहुत ठीक न होने के कारण अब राहुल गांधी ही कांग्रेस का चेहरा भी हैं और उसकी सत्ता में वापसी में सबसे बड़ी बाधा भी. बाधा इसलिए कि जब तक वो खुद या कांग्रेस प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार को लेकर दावेदारी नहीं छोड़ेंगे, विपक्षी दलों का शायद ही कोई नेता पूरे मन से मिशन 2019 में जुट पाये.

दावा है कि छूटता नहीं...

कांग्रेस के लिए अब तक अच्छी बात यही लगती है कि कैप्टन अमरिंदर ने लंबी लड़ाई लड़कर सत्ता में वापसी कर ली और अहमद पटेल ने राज्य सभा की अपनी सीट बचा ली है.

बेहतर तो यही होता कि राहुल गांधी आगे की तैयारी करते और 2019 के लिए सोनिया गांधी की तरह किसी और को मनमोहन सिंह की जगह दे देते. अगर राहुल गांधी को लगता है कि ममता बनर्जी और अरविंद केजरीवाल का काबू में रखना मुश्किल होगा तो शरद यादव को भी ट्राय कर सकते हैं. गारंटी है शरद यादव भी मनमोहन सिंह की तरह कभी निराश नहीं करेंगे.

आतंकी सिर्फ आतंकी होता है

जनवरी 2017 से अब तक की 5 महत्वपूर्ण घटनाएं बताती हैं कि अमेरिका के नजरिये में बदलाव आ रहा है. इसके पहले भारत की हमेशा ये शिकायत रहती थी कि जब भी पाकिस्तान से आयत होने वाले आतंकवाद की बात आती थी अमेरिका हमेशा भारत के साथ भेदभाव करता था.

संतोष चौबे

अगर हम जनवरी 2017 से होने वाली घटनाओं को देखें तो हमें इसके पूरे संकेत मिलते हैं कि अमेरिका अब गुड टेरर और बैड टेरर की मानसिकता से बाहर आ रहा है.

- पहले लश्कर-ए-तैयबा के हाफिज सईद को पाकिस्तान ने अमेरिकी दबाव में जनवरी 2017 में नजरबंद किया जो अभी तक जारी है. फिर हाफिज सईद के नए संगठन तहरीक-ए-आजादी-जम्मू-कश्मीर को प्रतिबंधित सूची में डाला.
- फिर प्रधान-मंत्री नरेंद्र मोदी की जून 2017 में अमेरिका यात्रा के दौरान ट्रम्प प्रशासन ने जम्मू-कश्मीर के आतंकी संगठन हिज्बुल मुजाहिदीन के संस्थापक सय्यद सलाहुद्दीन को वैश्विक आतंकवादी घोषित किया.
- जुलाई 2017 में अमेरिकी स्टेट डिपार्टमेंट ने अपनी वार्षिक कंट्री टेररिज्म रिपोर्ट में पहली बार पाकिस्तान को भारत में आतंक फैलाने वाले आतंकवादी समूहों के लिए सुरक्षित पनाहगाह माना.
- और अब उस सिलसिले को आगे बढ़ाते हुए अगस्त 2017 में अमेरिका ने हिज्बुल मुजाहिदीन को प्रतिबंधित संगठनों की सूची में डाल दिया है, जिसका सीधा मतलब है कि भारत में आतंक फैलाने वाले समूहों की वित्तीय स्थिति अब सीधे अमेरिकी निशाने पर आती जा रही है. इसके दूरगामी परिणाम होंगे क्योंकि पूरा विश्व टेरर-फंडिंग के खिलाफ एक-जुट होता जा रहा है और अमेरिका इसकी अगुवाई कर रहा है.

जनवरी 2017 से अब तक की ये पांच महत्वपूर्ण घटनाएं बताती हैं कि अमेरिका के नजरिये में बदलाव आ रहा है. इसके पहले भारत की हमेशा ये शिकायत रहती थी कि जब भी पाकिस्तान से आयत होने वाले आतंकवाद की बात आती थी अमेरिका हमेशा भारत के साथ भेदभाव करता था.

और इसके पहले होता भी यही रहा है. पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद से अमेरिकी मतलब सिर्फ हक़्क़ानी, तालिबान और उन समूहों तक सीमित रहता था जो पाकिस्तान में रहकर अफगानिस्तान में अमेरिकी और अफगान हितों को निशाना बनाया करते थे. वो अमेरिका के लिए बैड टेरर था. अमेरिका हमेशा पाकिस्तान को लताड़ लगाता रहता है इन आतंकवादी समूहों पर नकेल कसने के लिए और एक-पक्षीय ड्रोन हमले भी करता रहा है इनके पाकिस्तानी ठिकानों पर. और तो और पाकिस्तानी को अमेरिका से मिलने वाली वार्षिक सहायता राशि का एक बड़ा हिस्सा पाकिस्तान कैसे इन आतंकवादी समूहों पर कार्रवाई करता है पर निर्भर करता है.

जबकि भारत में पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद पर अमेरिका केवल जबानी कार्रवाई करता दिखा, मसलन 26/11 और पठानकोट के मुकदमे में तेजी लाई जाये और पाकिस्तान को आतंकवादी संगठनों पर लगाम कसनी चाहिए. अमेरिका इससे आगे जाकर जमीनी कार्रवाई करने से हिचकता रहा जैसे कि वो अमेरिका के लिए गुड टेरर था.

अफगानिस्तान पर ये व्यवस्था अभी भी बनी हुई है. लेकिन भारतीय नजरिये से महत्वपूर्ण ये है कि अमेरिका ने अब गुड टेरर व बैड टेरर में वो भेदभाव करना छोड़ दिया है जिसकी वजह से हाफिज सईद जैसा आतंकवादी जो अपने सिर पर अमेरिकी इनाम होते हुए भी पाकिस्तान में बेखौफ घूमा करता था और भारत विरोधी गतिविधियों को अंजाम देता रहता था वो पिछले आठ महीनों से नजरबन्द पड़ा हुआ है और हिज्बुल मुजाहिदीन पर अमेरिकी प्रतिबन्ध के बाद अब हम उम्मीद कर सकते हैं कि अमेरिका वही दबाव पाकिस्तान पर यहां भी डालेगा.

ह७म सभी जानते हैं की जमीनी स्तर पर इससे बहुत बदलाव नहीं आता है. हाफिज सईद का संगठन अभी भी अलग-अलग नामों से वहां कार्य कर ही रहा है. और तो और उसने एक रजिस्टर्ड राजनितिक दल, मिल्ली मुस्लिम लीग, भी बना लिया है. सय्यद सलाहुद्दीन और हिज्बुल मुजाहिदीन को पाकिस्तान स्वतंत्रता सेनानी करार देता है और सलाहुद्दीन पर अमेरिकी प्रतिबन्ध के बावजूद भी अपने रुख पर कायम रहने की बात कही है.

लेकिन जिओपॉलिटिक्स में और अंतर्राष्ट्रीय कूटनीति में अमेरिकी समर्थन किस ओर है बड़ा मायने रखता है और ये फिलहाल भारतीय पक्ष की ओर जाता दिख रहा है. ये बड़ी बात है कि अमेरिका अब लश्कर, हिज्बुल और जैश जैसे संगठनों को उसी नजरिये से देखता है जैसे हक़्क़ानी, तालिबान और अल-काएदा को. बाकी भारत सक्षम है अपने आतंवादी गतिविधियों और आतंकवादियों से निपटने में.

इतिहास नहीं जानते तो कुछ नहीं जानते..

स्टीवन स्पीलबर्ग। ब्लॉग : नजरिया

वे दिन मुझे अच्छी तरह याद हैं, जब मैं यहां से ग्रैजुएशन कर रहा था। यह 14 साल पहले की बात है। जरा बताएं, आप में से कितने लोग ग्रैजुशन के लिए 37 साल लगाते हैं। ज्यादातर की तरह मैंने भी किशोरावस्था में अपना कॉलेज शुरू किया लेकिन इसी दौरान मुझे यूनिवर्सल स्टूडियो में अपना ड्रीम जॉब मिल गया। मैंने कॉलेज छोड़ दिया। मैंने अपने पैरंट्स को बताया कि अगर मेरा फिल्मी करियर बहुत अच्छा नहीं रहा तो मैं फिर से कॉलेज में दाखिला ले लूंगा।

करियर ठीक चल गया। लेकिन बाद में मैं एक बड़ी वजह से लौटा। ज्यादातर लोग कॉलेज पढ़ाई के लिए जाते हैं तो कुछ अपने पैरंट्स के लिए, लेकिन मैं अपने बच्चों के लिए गया। मेरे 7 बच्चे हैं और मैं उनसे कॉलेज जाने की अहमियत पर बार-बार बात करता हूं लेकिन मैंने खुद कभी कॉलेज पूरा नहीं किया इसलिए उम्र के 50वें पड़ाव में मैंने कॉलेज की पढ़ाई पूरी करने की ठानी और ग्रैजुएशन पूरी की। मैं कॉलेज वापस आया क्योंकि मैं जानता था कि मुझे क्या चाहिए। आप भी जानते होंगे लेकिन शायद कुछ ऐसे लोग होंगे, जो यह नहीं जानते। या फिर आपको लगता है कि आप जानते हैं लेकिन शायद अपनी पसंद पर खुद ही सवाल खड़े कर रहे हैं। शायद आप वहां बैठकर यह सोच रहे होंगे कि अपने पैरंट्स को कैसे बताएंगे कि आप डॉक्टर बनना चाहते हैं, न कि एक कॉमिडी राइटर।

आपको आगे क्या करना है, इसे फिल्मों में कैरेक्टर डिफाइनिंग मूमेंट कहा जाता है। जैसे कि स्टार वॉर्सः द फोर्स अवेकंस में आप देखते हैं कि रे को महसूस होता है कि ताकत उसके साथ है या फिर इंडियाना जोंस डर पर जीत हासिल कर सांपों के ढेर के ऊपर से कूदते हुए अपना मिशन चुनते हैं। दो-ढाई घंटे की फिल्म में ऐसे अहम लम्हे गिने-चुने होते हैं लेकिन असल जिंदगी में आपको ऐसे लम्हे रोज मिलते हैं। मैं खुशनसीब हूं कि 18 साल की उम्र में मुझे मालूम था कि मैं क्या करना चाहता था। लेकिन यह नहीं जानता था कि कैसे करना है क्योंकि जिंदगी के शुरूआती 25 साल हम ऐसी बातों को सुनकर बिताते हैं, जो बातें हमारी नहीं होतीं। पैरंट्स और टीचर हमारे दिमाग में समझ और जानकारी भर देते हैं। इसके बाद एम्प्लॉयी और मेंटर इनकी जगह ले लेते हैं और समझाते हैं कि दुनिया असल में काम कैसे करती है। हालांकि ये लोग सही ही होते हैं, लेकिन कई बार हमारे दिलोदिमाग में शक पैदा होने लगता है। अगर हम सोचते हैं कि यह दुनिया को देखने का वैसा तरीका नहीं है, जैसा हम सोचते हैं। फिर भी रजामंदी में सिर हिला देना और उसके साथ चलना हमारे लिए आसान है। लेकिन अगर यह हमारे चरित्र का हिस्सा बन जाए और हम अपने ही विचारों को दबाने लगें तो यह नेल्सन के गाने ह्यएवरीबडी वॉज टॉकिंगङ्घ.ह्ल की तरह होगा यानी हर किसी को सुनने के चक्कर में मैं अपने ही मन की आवाज को सुन न सका।

हैरी नेल्सन का गाना

शुरू में मुझे यह आवाज सुनाई भी नहीं देती थी। जब मैं हाई स्कूल में था तो मुझे अपनी अंतरात्मा की आ?वाज बहुत हल्की सुनाई देती थी। लेकिन जब मैंने इस ओर ध्यान देना शुरू किया तो मुझे अंतर्ज्ञान (इंट्यूशन) होने लगा। खास बात यह है कि आपका अंतर्ज्ञान आपकी अंतरात्मा की आवाज से अलग होगा। ये दोनों साथ चलेंगे लेकिन फिर भी अलग होंगे। आपकी अंतरात्मा चिल्लाकर कहेगी, आपको यह करना चाहिए जबकि आपका इंट्यूशन कहेगा कि आप यह कर सकते हैं। आप उस आवाज को सुनें जो कहे कि आप यह कर सकते हैं। आपके चरित्र के बारे में इससे अच्छी व्याख्या कोई और नहीं कर सकता। मैंने जब एक बार इंट्यूशन की आवाज को सुनना शुरू किया तो कुछ प्रॉजेक्ट्स ने मुझे अपनी ओर खींचा। फिर बाकी से मैंने दूरी बना ली। मेरा काम एक ऐसी दुनिया बनाना है, जो 2 घंटे बरकरार रहती है। आपका काम एक ऐसी दुनिया बनाना है जो हमेशा के लिए बरकरार रहे। आप भविष्य के इन्वेंटर, मोटिवेटर, लीडर और केयरटेकर हैं। एक अच्छा भविष्य बनाने के लिए बीते कल की अच्छी तरह स्टडी करनी चाहिए। जुरासिक पार्क के लेखक माइकल क्रिचटोन ने इसी कॉलेज से ग्रैजुएशन किया और यहीं से मेडिकल की पढ़ाई भी की। वह यहां के अपने फेवरिट प्रफेसर की बात को अक्सर याद करते हैं कि अगर आप इतिहास नहीं जानते, तो कुछ नहीं जानते। आप एक ऐसी पत्ती हैं, जो नहीं जानती कि वह किसी पेड़ का हिस्सा थी। सोशल मीडिया पर आप सभी बिजी रहते हैं लेकिन सोशल मीडिया सिर्फ आज और अभी की बात करता है। मैं अपने बच्चों से हमेशा कहता हूं कि वे अपने इतिहास के बारे में जानें, क्योंकि वे क्या हैं, यह जानने के लिए यह जानना जरूरी हैं कि उनके पूर्वज क्या थे? अपने माता-पिता, दादा-दादी, नाना-नानी से बात करें। उनसे उनकी कहानियां पूछें। मैं वादा करता हूं कि आप बोर नहीं होंगे।

अगर आप खुशनसीब हैं तो आपके पैरंट्स मेरे पैरंट्स जैसे होंगे। मैं अपनी मां को अपना लकी चार्म मानता हूं। जब मैं 12 साल का था तो मेरे पापा ने मूवी कैमरा लाकर दिया, जिसकी बदौलत मैंने दुनिया को नई नजर से देखना शुरू किया। इसके लिए मैं उनका शुक्रगुजार हूं। लेकिन अगर आपका परिवार हमेशा आपके पास मौजूद नहीं है, तो भी एक बैकअप है। यह बैकअप है आपके दोस्त। जिस शख्स के पास दोस्त हैं, वह कभी नाकाम नहीं हो सकता। यही बात लागू होती है, आपके लाइफ पार्टनर पर। मैंने शुरू में इंट्यूशन की बात की लेकिन एक बार आपको अपना प्यार मिल जाता है तो इसकी जरूरत नहीं होती। जैसे कि जब मेरी मुलाकात कैट से हुई तो उनसे शादी मेरी जिंदगी का सबसे बदलाव वाला लम्हा बन गई।

किसी का प्यार, किसी का साथ, आपकी हिम्मत और अंतर्ज्ञान मिलकर आपको हीरो बनाती हैं। आखिर में मैं कहना चाहूंगा कि आप सभी आपस में जुड़े रहें। आंखों से आंखें मिलाकर बात करें। आप में से ज्यादातर लोग नीचे अपने डिवाइस में दिखकर वक्त गुजार देते हैं, जोकि सही नहीं है। इससे आप असलियत से दूर हो रहे हैं।

बहरहाल, मैं आप सबके लिए एक हॉलिवुड स्टाइल हैपी एंडिंग की कामना करता हूं। शुक्रिया!

(अमेरिका की हार्वर्ड यूनिवर्सिटी में स्टूडेंट्स को दिए लेक्चर की खास बातें)

जियो फोन

इससे कईयों की 'वाट' लग जाएगी

जियो फोन की लॉन्चिंग के बाद से कुछ लोग बेहद परेशानी में हैं. किन्हें होगा इस फोन से सबसे ज्यादा नुकसान चलिए जानते हैं.

श्रुति दीक्षित

जियो फोन क्या लॉन्च हुआ उसके बाद से ही हर जगह सिर्फ जियो फोन की ही बात हो रही है. इस फोन के आने से स्मार्टफोन मार्केट पर तो शायद ज्यादा नहीं फर्क पड़ेगा, लेकिन फीचर फोन मार्केट का क्या? सैमसंग, माइक्रोमैक्स जैसी कंपनियों का क्या होगा? चलिए जानते हैं.

भारत में जितने भी फीचर फोन प्लेयर हैं जैसे माइक्रोमैक्स, लावा, इंटेक्स, कार्बन, सैमसंग आदि को जियो के 4जी फोन से सबसे ज्यादा असर पड़ेगा. एक बात ये है कि अभी तक फीचर फोन मार्केट में चीनी स्मार्टफोन कंपनियों की पैठ नहीं है और जियो फोन का तगड़ा कॉम्पटीशन कोई नहीं है.

फ्री या नहीं?

जियो फोन कहने को तो फ्री है, लेकिन अगर देखा जाए तो 1500 रुपए सिक्योरिटी डिपॉजिट करना जरूरी है. ये तीन साल बाद आपको वापस मिल जाएगा. फोन रिफंड किया जाएगा, लेकिन इसके टर्म्स और कंडीशन क्या होंगे इसके बारे में अभी तक कुछ भी नहीं पता है.

लोगों को क्या परेशानी?

इससे आम लोगों को परेशानी की जगह फायदा ही होगा. एक बार सोचिए कि सितंबर 2016 में जब से जियो फ्री पैक लॉन्च किया गया है तब से कैसे एक के बाद एक कंपनियां जियो की टक्कर के पैक्स लॉन्च कर रही हैं. ऐसे में सैमसंग, माइक्रोमैक्स जैसी कंपनियों को अपना बिजनेस चलाने के लिए और 50 करोड़ फीचर फोन यूजर्स के मार्केट को डील करने के लिए इसी तरह के ऑफर्स निकालने होंगे. ऐसे में क्या होगी मार्केट की स्थिती.

एक रिपोर्ट के मुताबिक हर क्वार्टर में एयरटेल को 550 करोड़ का नुकसान हो रहा है. ये जियो के आने के बाद हो रहा है ऐसे में जियो फोन के बाद क्या उम्मीद की जा सकती है सैमसंग और माइक्रोमैक्स से? कुछ इसी तरह के ऑफर्स जल्द ही फीचर फोन्स में भी देखने को मिल सकते हैं.

इतना ही नहीं विषेशज्ञों की मानें तो ज्यादातर कंपनियां पहले ही कम कीमत वाले 4जी फोन बनाने की तैयारी कर चुकी हैं. जब से जियो आया है तब से भारतीय मार्केट में 4जी हैंडसेट्स की भरमार हो गई है. अब ये उम्मीद की जा रही है कि बेसिक फोन बनाने वाली कंपनियां जियो के साथ पार्टनरशिप करेंगी. जियो के आने के बाद से सैमसंग ने अपने महंगे फोन्स के साथ सिम देने की डील निकाली थी और उम्मीद की जा रही है कि इसी तरह की डील्स आगे भी की जाती रहेंगी.

क्या फीचर फोन्स होंगे अपग्रेड?

फीचर फोन्स का अपग्रेड होना तय है. अगर देखा जाए तो ये कुछ-कुछ वैसा ही होगा जैसे कि पहले रिम फोन के समय हुआ था. स्मार्टफोन की ग्रोथ थोड़ी कम हुई है क्योंकि फीचर फोन ग्राहक अपने फोन्स को अपग्रेड नहीं करते थे. इसका अहम कारण ये भी था कि स्मार्टफोन्स और फीचर फोन्स की कीमत में थोड़ा अंतर था. अब अगर फीचर फोन्स में भी उसी तरह के फीचर्स आने लगे तो फोन्स के साथ-साथ उम्मीद ये भी की जा सकती है कि यूजर्स भी अपग्रेड हो जाएं.

थोड़े से खर्च में हाईटेक कार

लोकल कार बाजार में आसानी में उपलब्ध ये गैजेट्स आपको बहुत कम कीमत में स्मार्ट कार का मजा दे सकते हैं ...

पुलकित भारद्वाज

कार खरीदने से ज्यादा बड़ी चुनौती यह तय करने में होती है कि आखिर खरीदी कौन सी जाए? आजकल लगभग एक से बजट में अलग-अलग कंपनियों की आई-20 और बलेनो जैसी प्रीमियम हैचबैक, डिजायर और एक्सेंट जैसी लोकप्रिय सिडान या फिर इकोस्पोर्ट, ब्रेजा और टीयूवी-300 जैसे कॉम्पेक एसयूवी या क्रॉसओवर उपलब्ध हैं. कार चुन भी ली तो एक और यक्ष प्रश्न खड़ा हो जाता है कि वेरिएंट कौन सा लिया जाए? क्योंकि कहने को तो एक ही कार होती है लेकिन इसके लो और हाई वेरिएंट में करीब दो से चार लाख रुपए का अंतर तक हो सकता है. ऐसे में अगर आपका बजट कम है लेकिन मन हाई टेक फीचर में अटक रहा है तो बड़ी दुविधा वाली बात हो जाती है.

लेकिन अपनी जेब पर दो-चार लाख रु का अनचाहा बोझ डाले बिना आप इस समस्या से निजात पा सकते हैं. यहां हम आपको पांच ऐसे गैजेट के बारे में बता रहे हैं जिन्हें बाहर यानी लोकल कार बाजार से लगवाया जा सकता है. ये गैजेट आपको किसी हाईटेक स्मार्ट कार का पूरा मजा देते हैं और आपकी जेब पर भारी भी नहीं पड़ते. चूंकि इनका इंजन से कोई कनेक्शन नहीं होता है तो गाड़ी की परफॉर्मेंस के प्रभावित होने का खतरा नहीं रहता. सिर्फ नयी ही नहीं, यदि आपके पास कोई पुरानी कार भी है तो भी आप इन गैजेट के सहारे अपनी कार को स्मार्ट बना सकते हैं. यानी कम हींग फिटकरी में ही रंग चोखा हो सकता है.

इमोबिलाइजर रिमोट लॉकिंग

इमोबिलाइजर रिमोट लॉकिंग सिस्टम आजकल की कारों में सुरक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण होने के साथ बाजार में आसानी से उपलब्ध होने वाली ऐसेसरी में शुमार है. ऐसी कई कंपनियां हैं जो काफी हाईटेक रिमोट लॉकिंग फीचर उपलब्ध करवाती हैं. ये डिवाइस जीपीएस ट्रेकिंग सुविधा से लैस होने के साथ आपके फोन से भी जुड़ने में सक्षम है. इसकी मदद से आप न सिर्फ अपनी कार को कहीं पर भी सुरक्षित खड़ी कर सकते हैं बल्कि चोरी हो जाने पर उसे आसानी से ट्रैक भी कर सकते हैं. अलग-अलग स्टैंडर्ड के रिमोट लॉकिंग डिवाइस के लिए आपको 4000 से लेकर 12000 रुपए तक की कीमत चुकानी पड़ सकती है.

ब्लूटूथ डिवाइस

ट्रैफिक नियमों को ध्यान में रखते हुए यह डिवाइस आपके लिए सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण हो सकती है. यदि ड्राइविंग के दौरान आपके फोन पर कोई ऐसी कॉल आती है जिसे अटेंड करना आपके लिए जरूरी है और

आप गाड़ी नहीं रोकना चाहते या नहीं रोक सकते तो यह गैजेट आपके लिए बेहतरीन विकल्प साबित हो सकता है. बाजार की कई नामचीन कंपनियां जैसे मोटोरोला, नोकिया भी इस तरह की एसेसरी का निर्माण करती हैं जिनसे ब्लूटूथ के जरिए आप अपने फोन को जोड़ सकते हैं. इनमें से कई हाईटेक गैजेट में ब्लूटूथ रीयर व्यू मिरर फेसिलिटी भी मिलती है. इसके जरिए रीयर व्यू मिरर में आपको कॉल कर रहे व्यक्ति का नंबर दिख जाता है. इतना ही नहीं, आप अपने ब्लूटूथ को एफएम या केबल के जरिए कार के म्यूजिक सिस्टम से भी जोड़ सकते हैं. यह उपकरण आपको बाजार में 5000 से 40000 रुपए तक में मिल सकता है.

पार्किंग सेंसर

पार्किंग सेंसर बेहद उपयोगी एसेसेरी है क्योंकि शहरों में कम होती जगह के इस दौर में अपनी कार को बिना कहीं टकराए पार्क करना बड़ी चुनौती बन गया है. खास तौर पर तब जब आपके पास कोई सिडान या एसयूवी हो. ऐसे में यह गैजेट आपकी गाड़ी को स्क्रैच और डेंट फ्री पार्क करवाने में काफी मदद कर सकता है. 2000 से लेकर 15000 रुपए की कीमत के बीच उपलब्ध होने वाले ये सेंसर अलग-अलग तकनीक से लैस होते हैं. इनमें से कुछ कार के पीछे या बगल में कोई ऑब्जेक्ट आने पर लगातार बीप की आवाज निकालते हैं, जबकि अन्य हाईटेक वेरिएंट उस ऑब्जेक्ट से आपकी कार की दूरी समेत कई महत्वपूर्ण निर्देश ऑडियो फॉर्मेट में देते हैं.

रियर व्यू कैमरा

आमतौर पर लोगों को गाड़ी बैक लेते समय असहजता महसूस होती है. कई बार कुछ छोटे ऑबजेक्ट्स आपकी गाड़ी के पीछे होते हैं जो रियर व्यू मिरर से नहीं दिखाई देते और कार से टकरा जाते हैं. इसके अलावा भी कई लोगों को बैक करते समय पीछे स्थित किसी चीजे से दूरी का सही अंदाजा नहीं हो पाता और गाड़ी पर डेंट आने की संभावना बन जाती है. ऐसे में यह उपकरण आपकी कार को किसी भी तरह के झटके से बचाने में आपकी मदद कर सकता है. इसकी मदद से आप कार में लगी स्क्रीन पर गाड़ी का रियर व्यू देख सकते हैं. यदि आपकी कार में पहले से ही डीवीडी डिस्प्ले स्क्रीन मौजूद है तो आप इससे सीधे ही रियर व्यू कैमरा को जुड़वा सकते हैं. यदि ऐसा नहीं है तो आप पूरा सेट भी खरीद सकते हैं जिनमें पार्किंग सेंसर भी उपलब्ध होते हैं. इसका डिस्पले आपकी कार के डैशबोर्ड को ध्यान में रखते हुए फिट किया जा सकता है. इसके अलावा बाजार में कुछ रियर मिर्रस भी उपलब्ध हैं जिनके अंदर ही आपको इनबिल्ट डिस्प्ले स्क्रीन मिल सकती है. रियर व्यू कैमरा के लिए आपको 2000 से 15000 रुपए चुकाने पड़ सकते हैं.

ऐसा मौका कई बार आपके सामने आया होगा जब आपको अंधेरे में अपनी कार पार्क करनी पड़ी होगी. ऐसे में कार से उतरते समय कई बार आपके पैर ऐसी जगहों पर पड़ जाते हैं, जहां से आपको बचना चाहिए था. यह न सिर्फ बुरा महसूस करवाता है बल्कि दोबारा गाड़ी में बैठने पर आपकी कार के गंदे होने का कारण भी बनता है. ऐसे में यह उपकरण आपके लिए मददगार साबित हो सकता है. फुट स्टेप लाइट गाड़ी के दरवाजों के नीचे की तरफ लगी होती है, जो दरवाजों के खुलते ही अपने आप जल जाती है. इस तरह कार से निकलते समय आप आसानी से जमीन को देख सकते हैं और अपने जूतों और कार को गंदा होने से भी बचा सकते हैं.

रमन का आईना है छत्तीसगढ़

तीन विधानसभा चुनाव और लगातार 14 साल का मुख्यमंत्री कार्यकाल। जितना समझा जा रहा है उससे कहीं अधिक यह है कि मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह ने छत्तीसगढ़ को अपना आईना बना लिया है। वे स्वयं जितने व्यवस्थित रहना पसंद करते हैं उतना ही व्यवस्थित राज्य विकसित करने के लिए उन्होंने कई प्रयास किए हैं...

7 दिसंबर, 2003... प्रदेश एक नए बदलाव की तैयारी में था। छत्तीसगढ़ को पहली निर्वाचित सरकार मिली थी और इसके मुखिया बनने जा रहा था वो शख्स जिसे उस दौरान अटल बिहारी बाजपेयी का विश्वास हासिल था और वो थे डॉ. रमन सिंह। 14 अगस्त को उन्होंने अपने मुख्यमंत्री कार्यकाल के 5000 दिन पूरे किए हैं। भाजपा की ओर से वे पहले सीएम हैं जिन्होंने इतना लंबा वक्त बतौर मुख्यमंत्री गुजारा है। ये 5000 दिन न सिर्फ न केवल डॉ. रमन सिंह के लिए गिने जा रहे हैं बल्कि इसलिए भी गिने जा रहे हैं कि छत्तीसगढ़ राज्य ने इन दिनों में बड़े-बड़े बदलाव देखे हैं।

दिग्गजों की जमात में अपनी अलग हस्ती रखने वाले मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह राजनीतिक घटनाक्रमों में उभरकर सामने आने वाले सितारे हैं। उन्होंने हर उस जिम्मेदारी का बोझ उठाया जिससे दूसरों ने बचने की कोशिश की। मोतीलाल वोरा के खिलाफ संसदीय चुनाव लड़ा हो या फिर केंद्रीय मंत्रिमंडल से इस्तीफा देकर प्रदेश भाजपा अध्यक्ष का पदभार संभालना। उनके विषय में चर्चित है कि वे कभी न नहीं करते और उनकी यही खासियत उन्हें राजनीति में पार्षद के चुनाव से लेकर प्रदेश के पहले निर्वाचित मुख्यमंत्री की उपलब्धियों तक ले आई।

डॉ. रमन सिंह ने जब मुख्यमंत्री का पदभार संभाला तब राज्य शिशु अवस्था में था। राज्य की स्थापना हुए महज 3 वर्ष बीते थे और बहुत सी चुनौतियां थी जिनसे निपटकर छत्तीसगढ़ को समस्या, अव्यवस्था, विसंगतियों और भेदभाव से दूर निकलकर एक विकासशील राज्य में तब्दील किया जाना था। जब मुख्यमंत्री 5000 दिनों के अपने साथ की बात कर रहे हैं तो समीक्षा उनकी नहीं राज्य की होगी। डॉ. रमन सिंह की समीक्षा का आईना छत्तीसगढ़ ही है जिसे वे शिशु अवस्था से किशोरावस्था तक लेकर आए हैं।

सड़क, स्वास्थ्य, शिक्षा, बिजली। इन मूलभूत समस्याओं से अटे-पड़े राज्य में नक्सलवाद का कहर, जख्म पर नमक छिड़कने के बराबर था। राज्य की स्थापना हुए महज तीन वर्ष बीते थे तो स्वाभाविक था कि हर क्षेत्र में एक नई नींव रखी जानी थी जिस पर विकास का महल तैयार हो। तारीखें बदलती गईं और राज्य में बहुत कुछ बदलता गया। मूलभूत ढांचा तैयार होता रहा और उस पर ईंट दर ईंट जोड़ी जाती रही। बहुत कुछ बदलता गया, लेकिन इस बीच जो टिक पाया वो डॉ. रमन सिंह हैं।

जनता का भरोसा और 5000 दिन

किसी भी राज्य के समग्र विकास के लिए स्थायित्व पहली शर्त होती है. सरकारों का चुना जाना और थोड़े समय में सत्ता में फेरबदल से विकास न केवल प्रभावित होता है बल्कि आम आदमी में निराशा का भाव भी उत्पन्न होता है. यही कारण है कि इस बार निर्वाचित सरकार को अगली बार निर्वाचित होने में अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है.

मनोज कुमार

इस मामले में छत्तीसगढ़ की रमन सरकार ने आम आदमी को भरोसा दिलाया है कि राज्य के समग्र विकास के लिए स्थायी सरकार बनी रहेगी. रमन सरकार के 5000 दिनों का कार्यकाल पूर्ण होने को इसी परिप्रेक्ष्य में देखा जाना चाहिए. साल 2000 में मध्यप्रदेश से अलग होकर छत्तीसगढ़ को पृथक राज्य का दर्जा मिला और पहली बार बहुमत के आधार पर कांग्रेस ने अपनी सरकार बनायी. तीन वर्षों में कांग्रेस की सरकार के प्रदर्शन को, उसके विकास कार्यक्रमों को और कांग्रेस से उपजी निराशा ने भाजपा को अवसर दिया. भाजपा ने स्वच्छ छवि वाले केन्द्र में राज्यमंत्री रहे डॉ. रमनसिंह को राज्य की बागडोर सम्हालने की जिम्मेदारी सौंपी. मृदुभाषी, समन्वय के पक्षधर और राज्य के विकास के लिए स्वयं को झोंकने वाले डॉ. रमनसिंह ने छत्तीसगढ़ को विकास के ऐसे रास्ते पर लेकर निकले कि एक आदिवासी राज्य आज देश के विकसित प्रदेशों की गिनती में आ गया है. राज्य की अपनी धरोहर को उन्होंने विश्वमंच पर पहचान दिलायी. शिक्षा, स्वास्थ्य, सडक, पानी, बिजली और रोजगार के अनेक अवसर के लिए उन्होंने रास्ते खोले. कुछ राज्य की जरूरतों के अनुरूप योजनाओं का श्रीगणेश किया जो कुछ केन्द्र समर्थित लोककल्याणकारी योजनाओं को व्यवहारिक रूप से अमल में लाकर छत्तीसगढ़ के विकास को नया आयाम दिया.

साल 2003 के बाद से डॉ. रमनसिंह छत्तीसगढ़ की जनता के दिल में ऐसे बसे कि लगातार तीन बार उनकी सरकार को जनादेश मिला. आज जब वे अपनी सरकार के 5 हजार दिन का जश्न मना रहे हैं तो यह रमन सरकार का जश्न नहीं बल्कि छत्तीसगढ़ राज्य का जश्न है, उस मतदाता का जश्न है जिन्होंने सरकार पर भरोसा किया और सरकार ने उनके भरोसे को बनाये रखा. एकाएक यकीन करना मुश्किल सा हो जाता है कि लगातार कोई इतने लम्बे समय तक बहुमत के साथ रह सकता है? असंभव को संभव करना मुख्यमंत्री डॉ. रमनसिंह को आता है. आखिरकार वे डाक्टर जो ठहरे. वे नब्ज पकड़ कर बीमारी जान लेते हैं और दवा करना भी उन्हें आता है. कवर्धा के डॉ. रमनसिंह ने मुख्यमंत्री के रूप में सरगुजा से लेकर बस्तर तक ऐसी ऐसी दवा का इंतजाम किया है जिसकी कल्पना आम आदमी ने नहीं की थी. मिसाल के तौर पर जिस नमक के लिए सदियों से आदिवासी लूटे जाते रहे हैं, उन्हें महज 25 पैसे में नमक देकर लूट से बचा लिया. एक किलो नमक के बदले महंगी चिरौजी देने वाले आदिवासियों को उनकी उपज का उचित मूल्य मिलने लगा. नक्सलियों की तथाकथा से आज पूरा देश वाकिफ है लेकिन पीड़ित परिवारों की बच्चों की शिक्षा का ऐसा मुकम्मल इंतजाम रमन सरकार ने किया कि वे देश के नामचीन कॉलेजों में गौरव करने वाले अंकों से परीक्षा पास करने लायक बन गए हैं. कोई इंजीनियर बन रहा है तो कोई डॉक्टर, किसी ने

कौशल उन्नयन में कारीगरी सीख कर स्वयं का रोजगार पैदा कर लिया तो महतारी-बहनों को आत्मनिर्भर बनने के इतने अवसर मिले कि लोगों को सोचना पड़ रहा है कि इससे बेहतर और कौन सी सरकार होगी.

लाइवलीहुड कॉलेज मुख्यमंत्री कौशल उन्नयन योजना का एक उपक्रम है। राज्य के सभी 27 जिलों में लाइवलीहुड कॉलेज की स्थापना की गई है और इन कॉलेजों में राज्य के युवाओं को निःशुल्क प्रशिक्षण दिया जाता है। मोटेतौर पर अब तक एक लाख से अधिक युवाओं को विभिन्न कार्यों का प्रशिक्षण दिया गया है। प्रशिक्षण उपरांत कुछेक ने राज्य के उद्योगों में नौकरी प्राप्त कर ली है तो अनेक ऐसे हैं जिन्होंने स्वयं का उद्यम स्थापित कर जीवोकोपार्जन कर रहे हैं। लाइवलीहुड कॉलेज में ट्रेनिंग प्राप्त करने वालों में लडके और लड़कियां दोनों हैं। लाइवलीहुड कॉलेज का यह कांसेप्ट वास्तव में रोजगार की दिशा खोलने के लिए अनूठा है।

रमन सरकार ने महिला सशक्तिकरण की दिशा में उल्लेखनीय कार्य किया है. आर्थिक रूप से उन्हें संबल बनाने के अनेक प्रयास तो किया ही गया है बल्कि मानसिक रूप से भी उन्हें पक्का बनाया गया है. इसका एक उदाहरण उर्मिला राज्य के एक छोटे से कस्बानुमा नगर देवभोग की एक बहुत ही गरीब मध्यम परिवार की बेटी उर्मिला सोनवाने है. पिता ने अपनी जमीन बेचकर उर्मिला की शादी के लिये प्रबंध किया था. उर्मिला स्वयं राज्य शासन में एक शासकीय कर्मचारी के तौर पर कार्य करती है. उर्मिला एक पिता की मजबूरी को समझती थी और वह अपने पिता के अरमानों को पूरा करना चाहती थी लेकिन वह अपनी जिंदगी को भी नरक नहीं बनने देना चाहती थी. अपने फैसले के बाद वह कहती है- कुछ खोकर भविष्य बचाया जा सकता है तो यह करना चाहिये. पिता की जमीन बिक गयी, यह सही है लेकिन मेरा भविष्य सुरक्षित हो गया. उर्मिला के इस फैसले से समाज का सन्नाटे में आ जाना कोई अनपेक्षित नहीं था लेकिन बदलाव की शुरूआत जो उर्मिला ने की है, उसकी गूंज देवभोग जैसे छोटे से हिस्से में ही नहीं बल्कि पूरे देश में होने लगी है.

मुख्यमंत्री डॉ. रमनसिंह अपनी आलोचना से विचलित नहीं होते हैं बल्कि वे अपने आलोचकों से संवाद कर अपनी गलतियों को ठीक करने की कोशिश करते हैं. यही कारण है कि मीडिया का साथ उन्हें हमेशा मिलता रहा है और मीडिया भी उन पर भरोसा बनाये रखा है. रमन सरकार ने एक रुपये किलो चावल देकर क्रांति का बिगुल फूंक दिया. उन्होंने सत्ता सम्हालते ही राज्य की जनता से वायदा किया था कि कोई भी व्यक्ति भूखा नहीं सोएगा. अपने वचन की पूर्ति के लिए उन्होंने कई योजनाओं का श्रीगणेश किया. रोजगार के अभाव में पलायन सबसे बड़ी चुनौती थी सो उन्होंने एक रुपये किलो चावल देने की महत्वाकांक्षी योजना का आरंभ किया। साथ में तेल और नमक जैसी जरूरत की दूसरी चीजों को भी रियायती दर पर देना आरंभ किया। अपनी इस योजना को लेकर वे विरोधियों के निशाने पर भी रहे। डॉ. रमनसिंह की यह योजना थोड़े ही समय में लोकप्रियता की बुलंदी को छूने लगी। काम के अभाव में पलायन करने वाले छत्तीसगढ़ के ग्रामीण और मजदूर पलायन से तौबा करने लगे। अनाज का वितरण में धांधली न हो, इसकी पुख्ता व्यवस्था उन्होंने की और इसका परिणाम यह निकला कि छत्तीसगढ़ के पीडीएस प्रणाली की सुप्रीम कोर्ट ने सराहना की। उनके इन प्रयासों का सुफल यह मिला कि हर वर्ष बड़ी संख्या में काम की तलाश में पलायन करने वाले भाई-बहिनों को अब घर से बाहर भटकना बंद हो गया. सस्ते में अनाज, तेल और नमक के साथ साल भर रोजगार की व्यवस्था ने पलायन को ही पलायन करने पर मजबूर कर दिया. ऐसे लोग जो तीज-त्योहार पर अपनों से दूर रहते थे, परदेस में अत्याचार सहते थे लेकिन उनके पास कोई दूसरा रास्ता नहीं था, ऐसे में रमन सरकार से मिली मदद ने उनकी घरवापसी करा दी. आज वे अपनों के साथ प्रसन्न हैं.

रमन सरकार आम आदमी की सरकार बन गई थी। रमन सरकार राज्य की जनता को रोजगार और बेहतर जिंदगी देने के लिए ही प्रयासरत नहीं थी बल्कि उसकी कोशिश थी कि छत्तीसगढ़ की जीवनशैली, परम्परा एवं संस्कृति को न केवल संरक्षित किया जाए बल्कि उसे विस्तार भी दिया जाए। इस कड़ी में रमन सरकार ने राजिम कुंभ को विधान रूप धार्मिक गुरुओं की सहमति से मान्यता दिलाने का प्रयास किया। आज राजिम कुंभ छत्तीसगढ़ का प्रतिष्ठा आयोजन बन चुका है। इस तरह इन 5 हजार दिनों में हर दिन एक ऐसे फैसले का रहा है जो छत्तीसगढ़ के विकास को नया आयाम देता है. ये दिन और बढ़ेंगे और विकास की नई इबारत लिखता दिखेगा मोर सुघ्घर छत्तीसगढ़.

लंबे सफर के ये पड़ाव...

गुजरात से की जाती रही तुलना

बहरहाल बतौर मुख्यमंत्री छत्तीसगढ़ के विकास को हमेशा ही गुजरात के विकास से तौला गया। ऐसा इसलिए क्यूंकि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 7 अक्टूबर 2001 से लेकर 22 मई 2014 तक गुजरात के मुख्यमंत्री रहे। वहीं डॉ. रमन सिंह ने 7 दिसंबर, 2003 को मुख्यमंत्री का पदभार संभाला। दोनों ही राज्यों की तासीर अलग जरुर थी लेकिन इन दोनों ही राज्यों ने उल्लेखनीय प्रगति की। समय-समय पर स्वयं मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह ने अपने आंकड़ों की तुलना करने के लिए गुजरात के आंकड़ों को सामने रखा। दिलचस्प यह भी है कि बतौर मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह ही वह व्यक्ति हैं जो भाजपा की ओर से सबसे ज्यादा दिनों तक मुख्यमंत्री का कार्यकाल संभाल पाए हैं और पिछले साल ही उन्होंने नरेंद्र मोदी का रिकॉर्ड तोड़ा है। विकास दर की बात हो या फिर योजनाओं की। वो वक्त ही ऐसा था कि गाहे-बेगाहे गुजरात के आंकड़े छत्तीसगढ़ की तुलना के लिए मापदंड बन जाते थे। हालांकि राज्य ने कई बार उससे भी बेहतर किया। वर्ष 2011 की ही बात करें तो मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह ने आंकड़े सामने रखते हुए कहा था, इस राज्य को बने दस साल हो गए है। यहां पिछले पांच वर्षों में आर्थिक विकास दर की औसत 10.4 की रही है। इस साल विकास दर गुजरात से ज्यादा है और देश में सबसे अधिक 11.47 रही है, अगले साल ये और अधिक होगी।

वर्ष 2016-17 का बजट पेश करते हुए मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह ने जानकारी दी थी कि वर्ष 2016-17 के अग्रिम अनुमान अनुसार राज्य की जी.एस.डी.पी. विकास दर 7.14 प्रतिशत होना अनुमानित है। वहीं उन्होंने बताया था कि वर्ष 2016-17 में स्थिर भाव पर कृषि क्षेत्र में 5.87 प्रतिशत, औद्योगिक क्षेत्र में 6.11 प्रतिशत एवं सेवा क्षेत्र में 9.90 प्रतिशत वृद्धि अनुमानित है। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि वर्ष 2016-17 में देश की कृषि क्षेत्र में विकास दर 4.1 प्रतिशत, औद्योगिक विकास दर 5.2 प्रतिशत तथा सेवा क्षेत्र विकास दर 8.8 प्रतिशत होना अनुमानित है।

• 80 हजार करोड़

वर्ष 2003 में पूरे प्रदेश का बजट 7 हजार करोड़ रुपए था जो कि अब बढ़कर 80 हजार करोड़ रुपए हो गया है। जीएसडीपी 47 हजार करोड़ थी, अब बढ़कर 250 हजार करोड़ हो गई है। प्रति व्यक्ति आय 12 हजार से बढ़कर 82 हजार रूपया हो गया है।

• 27 जिले

जिला प्रशासन सेवाओं को जनता के नजदीक ले जाने के लिए 11 नए जिलों का निर्माण किया, अब 27 जिले हो गए। इसी तरह प्रदेश के तहसीलों की संख्या 98 से बढ़कर 150 हुई है। नगर पंचायत की संख्या 49 से112 हो गईं, नगर पालिका परिषद की संख्या 28 से बढ़कर 43 हो गई और नगर निगमों की संख्या 10 से बढ़कर 13 हो गई है।

• 38 हजार स्कूल

प्राथमिक स्कूलों की संख्या 13 हजार से बढ़कर 38 हजार हो गई है। मिडिल स्कूलों की संख्या 5हजार से बढ़कर साढ़े 16 हजार हो गई है। हाई स्कूल की संख्या 9 सौ से बढ़कर 2 हजार 600 हो गई है। हायर सेकेण्डरी स्कूलों की संख्या 6 सौ से बढ़कर 3 हजार 715 हो गई है। एक और महत्वपूर्ण परिवर्तन आया है बल्कि उसका असर बच्चों में दिख रहा है और वो असर है, ड्रॉप आउट रेट पर। ड्रॉप आउट रेट 2003 में 11 प्रतिशत से घटकर 1 प्रतिशत हो गया है।

• उच्च शिक्षा

सन 2003 में एक भी राष्ट्रीय स्तर का संस्थान नहीं था। अब हालात दूसरे हैं। एम्स की स्थापना हो गई है, आई.आई.एम. की स्थापना हो गई है। सरकारी विश्वविद्यालयों की संख्या 3 से बढ़कर 13 हो गई है। शासकीय महाविद्यालय जो सिर्फ 116 थे आज बढ़कर 224 हो गए हैं। मेडिकल कॉलेज 2 से बढ़कर 10 हो गए हैं। इंजीनियरिंग कॉलेज सिर्फ 12 थे आज 50 हैं। कृषि महाविद्यालय, सिर्फ चार महाविद्यालय उस समय थे इसकी संख्या बढ़कर 21 हो गई है। पॉलिटेक्निक 10 से 51 और आई.टी.आई. 61 से बढ़कर 176 हो गए हैं। अनुसूचित जाति-जनजाति छात्रावासों और आश्रम शालाओं की संख्या 1 हजार 837 थी बढ़कर 3 हजार 250 गई है।

• 22 हजार 764 मेगावॉट

छत्तीसगढ़ में विभिन्न संस्थाओं द्वारा बिजली उत्पादन 4 हजार 732 मेगावॉट से बढ़कर 22 हजार 764 मेगावॉट हो गया है।

• 60 हजार किलोमीटर

5 हजार दिनों में 60 हजार किलोमीटर सड़कें, 12 सौ वृहद - मध्यम पुल और 23 हजार से अधिक पुलियों का निर्माण किया गया।

मराठा साम्राज्य में हुई थी गणेश चतुर्थी की शुरुआत

गणेश चतुर्थी हिंदुओं का एक सबसे महत्वपूर्ण त्यौहार है। यह हिंदू धर्म के लोगों द्वारा हर साल बहुत साहस, भक्ति और उल्लास के साथ मनाया जाता है। यह भारत में विनायक चतुर्थी के नाम से भी लोकप्रिय है। यह प्राचीन काल से पूरे भारत में हिन्दूओँ के सबसे महत्वपूर्ण देवता, भगवान गणेश जी (जिन्हें हाथी के सिर वाला, विनायक, विघ्नहर्ता, बुद्धि के देवता और प्रारम्भ के देवता आदि के नाम से जाना जाता है) को सम्मानित करने के लिये मनाया जाता है। हिंदू कैलेंडर के अनुसार, यह (अगस्त और सितम्बर के बीच) भाद्रप्रदा के महीने में हर साल आता है। यह शुक्ल चतुर्थी (अर्थात चाँद वृद्धि अवधि के चौथे दिन) पर शुरू होता है और अनंत चतुर्दशी पर 10 दिन (अर्थात चाँद वृद्धि अवधि के 14 वें दिन) के बाद समाप्त होता है।

गणेश चतुर्थी का त्यौहार कई रस्में, रीति रिवाज और हिंदू धर्म के लोगों के लिए बहुत महत्व रखता है। विनायक चतुर्थी की तारीख करीब आते ही लोग अत्यधिक उत्सुक हो जाते हैं। आधुनिक समय में, लोग घर के लिए या सार्वजनिक पंडालों को भगवान गणेश की मिट्टी की मूर्ति लाते है और दस दिनों के लिए पूजा करते हैं। त्यौहार के अंत में लोग मूर्तियों को पानी के बडे स्रोतों (समुद्र, नदी, झील, आदि) में विसर्जित करते हैं।

यह लोगों द्वारा देश के विभिन्न राज्यों जैसे महाराष्ट्र, तेलंगाना, कर्नाटक, उत्तर प्रदेश और पश्चिमी और दक्षिणी भारत के अन्य भागों सहित बड़े उत्साह के साथ मनाया जाता है। यह 10 दिनों का उत्सव है जो अनंत चतुर्दशी पर समाप्त होता है। यह कई तराई क्षेत्रों नेपाल, बर्मा, थाईलैंड, कनाडा, संयुक्त राज्य अमेरिका, गुयाना, मारीशस, फिजी, सिंगापुर, मलेशिया, इंडोनेशिया, कंबोडिया, न्यूजीलैंड, त्रिनिदाद और टोबैगो आदि में भी मनाया जाता है।

उ७त्पत्ति और इतिहास

गणेश चतुर्थी के त्यौहार पर पूजा प्रारंभ होने की सही तारीख किसी को ज्ञात नहीं है, हालांकि इतिहास के अनुसार, यह अनुमान लगाया गया है कि गणेश चतुर्थी 1630-1680 के दौरान शिवाजी (मराठा साम्राज्य के संस्थापक) के समय में एक सार्वजनिक समारोह के रूप में मनाया जाता था। शिवाजी के समय, यह गणेशोत्सव उनके साम्राज्य के कुलदेवता के रूप में नियमित रूप से मनाना शुरू किया गया था। पेशवाओं के अंत के बाद, यह एक पारिवारिक उत्सव बना रहा, यह 1893 में लोकमान्य तिलक (एक भारतीय स्वतंत्रता सेनानी और समाज सुधारक) द्वारा पुनर्जीवित किया गया।

गणेश चतुर्थी एक बड़ी तैयारी के साथ एक वार्षिक घरेलू त्यौहार के रूप में हिंदू लोगों द्वारा मनाना शुरू किया गया था। सामान्यतः यह ब्राह्मणों और गैर ब्राह्मणों के बीच संघर्ष को हटाने के साथ ही लोगों के बीच एकता लाने के लिए एक राष्ट्रीय त्यौहार के रूप में मनाना शुरू किया गया था। महाराष्ट्र में लोगों ने ब्रिटिश शासन के दौरान बहुत साहस और राष्ट्रवादी उत्साह के साथ अंग्रेजों के क्रूर व्यवहार से मुक्त होने के लिये मनाना शुरू किया था। गणेश विसर्जन की रस्म लोकमान्य तिलक द्वारा स्थापित की गयी थी।

धीरे - धीरे लोगों द्वारा यह त्यौहार परिवार के समारोह के बजाय समुदाय की भागीदारी के माध्यम से मनाना शुरू किया गया। समाज और समुदाय के लोग इस त्यौहार को एक साथ सामुदायिक त्यौहार के रुप में मनाने के लिये और बौद्धिक भाषण, कविता, नृत्य, भक्ति गीत, नाटक, संगीत समारोहों, लोक नृत्य करना, आदि क्रियाओं को सामूहिक रुप से करते है। लोग तारीख से पहले एक साथ मिलते हैं और उत्सव मनाने के साथ ही साथ यह भी तय करते है कि इतनी बडी भीड को कैसे नियंत्रित करना है।

गणेश चतुर्थी, एक पवित्र हिन्दू त्यौहार है, लोगों द्वारा भगवान गणेश (भगवानों के भगवान, अर्थात बुद्धि और समृद्धि के सर्वोच्च भगवान) के जन्म दिन के रूप में मनाया जाता है। पूरा हिंदू समुदाय एक साथ पूरी श्रद्धा और समर्पण के साथ प्रतिवर्ष मनाते है। हिंदू पौराणिक कथाओं के अनुसार, यह माना जाता है कि गणेश जी का जन्म माघ माह में चतुर्थी (उज्ज्वल पखवाड़े के चौथे दिन) हुआ था। तब से, भगवान गणेश के जन्म की तारीख गणेश चतुर्थी के रूप में मनानी शुरू की गयी। आजकल, यह हिंदू समुदाय के लोगों द्वारा पूरी दुनिया में मनाया जाता है।

हंसाने वाले फिल्मी भूत

एनाबेल क्रिएशन फिल्म सिनेमा हॉल में देखने के बाद मुझे लग रहा है कि भारतीय हॉरर फिल्म और हॉलीवुड की हॉरर फिल्मों में कई ऐसी बातें हैं जो अलग हैं और यकीनन भारतीय हॉरर फिल्में सिर्फ मेरे जैसे लोगों के लिए ही बनाई जाती हैं.

श्रुति दीक्षित

रोमांस, कॉमेडी, एक्शन, थ्रिलर और हॉरर भारतीय सिनेमा में इसकी अलग ही परिभाषा है. जहां तक हॉरर फिल्मों की बात है वहां तो भारतीय सिनेमा अभी तक दर्शकों को निराश ही करती आई है. हॉरर फिल्मे देखने के शौकीन लोग अगर इस स्टोरी को पढ़ रहे हैं तो वो आसानी से समझ जाएंगे कि मैं क्या कहने की कोशिश कर रही हूं. दरअसल, मैं उन लोगों में से हूं जो हॉन्टेड 3डी जैसी फिल्म देखकर भी डर जाते हैं, लेकिन सभी हॉरर फिल्में देखते जरूर हैं.

फिल्म देखकर जो हालत हुई उसका विवरण इस पोस्ट में तो नहीं किया जा सकता है और इसलिए उसे हम भूली हुई बात समझकर आगे बढ़ जाते हैं. फिलहाल एनाबेल क्रिएशन फिल्म सिनेमा हॉल में देखने के बाद मुझे लग रहा है कि भारतीय हॉरर फिल्म और हॉलीवुड की हॉरर फिल्मों में कई ऐसी बातें हैं जो अलग हैं और यकीनन भारतीय हॉरर फिल्में सिर्फ मेरे जैसे लोगों के लिए ही बनाई जाती हैं. न कि उन लोगों के लिए जो बड़े चाव से हॉरर फिल्में देखते हैं और आहट जैसे शो से भी नहीं डरे हैं. खैर, चलिए उन अहम बातों को जानते हैं जहां हमारी हॉरर फिल्में हॉलीवुड से अलग हैं...

1. भूत...

अब भूत की बात हो रही है तो सबसे पहले भूत को ही आड़े हाथों ले लेते हैं. रामसे और एक्स जोन या जी हॉरर शो के जमाने में हमें सिर्फ यही दिखाया गया था कि भूत जो हैं वो थर्ड डिग्री बर्न विक्टिम की तरह लगते हैं. इसके बाद फिल्मों में लंबे चौड़े शैतान दिखाए जाने लगे. अपने जमाने की हिट फिल्म वीराना के भूत को भी अब देखा जाए तो शायद भूतनी को देखकर डर तो बिलकुल नहीं लगेगा. यहीं अगर पुराने जमाने की हॉरर फिल्म द रिंग सीरीज देखी जाए तो भूत कैसा होता है वो दिख जाएगा. अगर ब्लॉकबस्टर फिल्म द एक्जॉरिज्म ऑफ एमिली रोज देखी जाए तो और लगने लगेगा कि भूत इतने रियल भी हो सकते हैं. तो जी हम इस नतीजे पर पहुंचे हैं कि बॉलीवुड के भूत ज्यादा डरावने दिखाने के चक्कर में थोड़ी फनी हो जाते हैं.

स्टोरी...

अब बात करते हैं स्टोरी की. स्टोरी लाइन को लेकर वैसे भी भारतीय फिल्मों की गाहे-बगाहे बात होती ही रहती है, लेकिन हॉरर स्टोरी का क्या? एक निश्चित पैटर्न है... चाहें राज देखें, या वीराना, अशोक कुमार की महल देखें या फिर हाल ही में रिलीज हुई बिपाशा बासु की अलोन. सभी फिल्मों में हिरोइन और हीरो की लव स्टोरी बहुत जरूरी होती है. बहुत पुरानी फिल्मों को छोड़ दिया जाए तो हालिया फिल्मों में रोमांटिक गाने और थोड़े हॉट सीन होने जरूरी है. फिर जो कुछ बचता है उसमें भूत आता है और स्क्रीन स्पेस भी काफी कम होती है उसकी. एक और बात. हिरोइन को बचाने के लिए हीरो की जरूरत पड़ती ही है.

यहीं अगर हॉलीवुड फिल्मों की बात करें तो हिरोइन खुद अपने आप में एक मजबूत कैरेक्टर होती है. इसके अलावा, यहां भूत को और उससे जुड़ी हरकतों को ज्यादा स्क्रीन टाइम दिया जाता है. इसी के साथ, स्टोरी में एक बात खास होती है. लगभग 80% हॉलीवुड हॉरर फिल्मों में भूत ऐसे घर से जुड़ा होता है जहां कोई नया परिवार आकर रहने लगता है.

स्पेशल इफेक्ट...

अब बॉलीवुड की बातें तो आपको पता ही हैं और हॉलीवुड के स्पेशल इफेक्ट देखने हों तो हालिया रिलीज एनाबेल क्रिएशन देख सकते हैं. स्पेशल इफेक्ट के मामले में अभी तक बाहूबली जैसी फिल्म को ही सफलता हासिल हुई है. स्पेशल इफेक्ट की ही बात की जाए तो साधारण से दिखने वाले जोकर को भी फिल्म इट में इतना खतरनाक बना दिया है कि ट्रेलर देखकर ही डर लगता है.

चालिसा या फिर एक्जॉरिस्म...

हिंदी फिल्मों में हनुमान चालिसा हमेशा काम आती है. कोई भी भूत हो वो इससे डरता ही है. पहली वाली 1920 फिल्म में तो एक्जॉरिस्म काम नहीं आया था और आखिर में हीरो को हनुमान चालिसा से काम चलाना पड़ा था जो उसे जबानी याद थी. अब देखिए अंग्रेजी फिल्मों में कई बार एक्जॉरिस्म काम कर जाता है, लेकिन अभी एनाबेल क्रिएशन के बाद समझ आया कि भगवान की प्रेयर और होली क्रॉस भी कई बार कोई काम नहीं आता है. तो यहां भी विदेशी फिल्में देसी से अलग हैं. आने वाली फिल्म क्रूसिफिक्शन में तो और भी ज्यादा डरावने सीन हैं.

हॉलीवुड हो या बॉलीवुड दोनों ही तरह की फिल्मों में बच्चों का बहुत बड़ा योगदान होता है. हां बॉलीवुड के बच्चे और हॉलीवुड के बच्चे दोनों ही बहादुर होते हैं. कभी भूत से दोस्ती कर लेते हैं तो कभी उनसे लड़ते हैं. फर्क सिर्फ इतना होता है कि हॉलीवुड के बच्चे इतने बहादुर होते हैं कि अकेले किसी भी कमरे में चले जाते हैं. उनके पास सभी तरह के साधन होते हैं जिनसे वो भूत से दूर रह सकें. उनके घर में कई कोने होते हैं जहां वो छुप सकें साथ ही इतनी हिम्मत होती है कि उन्हें मालूम होता है कि भूत है फिर भी वो कमरे में अकेले सो जाते हैं.

तो कुल मिलाकर ऐसा लगा कि एनाबेल क्रिएशन फिल्म को थिएटर में देखकर मैंने कोई गलती नहीं की. फिल्म देखकर कम से कम इतनी सारी बातें तो पता चल गईं. वीकएंड के लिए अगर आप प्लान कर रहे हैं तो ये फिल्म एक अच्छा विकल्प है.

बनना ही होगा ‘कूल’ बहू

अगर अपने ससुराल वालों के साथ घुलना-मिलना आपके लिए मुश्किल हो रहा है तो यह बहुत तनावपूर्ण हो सकता है. और आप थोड़े संवेदनशील हैं तब तो बात और हाथ से निकल सकती है.

सरवत फातिमा

एक बात तो हमें मान ही लेनी चाहिए कि ये जो सास-बहू के सीरियलों से हम चिपके रहते हैं वो किसी तरह का साइंस फिक्शन नहीं बल्कि लगभग हर भारतीय घर के रोजाना की कहानी को बढ़ा-चढ़ाकर पेश करते हैं. और बदकिस्मती से अगर आपका ससुराल, मां के घर जैसा नहीं है तो फिर इन सीरियलों के खूसट किरदारों से खुद को रिलेट कर पाएंगे.

अगर अपने ससुराल वालों के साथ घुलना-मिलना आपके लिए मुश्किल हो रहा है तो यह बहुत तनावपूर्ण हो सकता है. और आप थोड़े संवेदनशील हैं तब तो बात और हाथ से निकल सकती है. भले ही लोग आपको कहें कि ऐसी चीजों को दिल पर ना लें, एक कान से सुनें दूसरे से निकाल दें आदि-आदि लेकिन अगर ईमानदारी से बोलें तो ये इतना आसान नहीं है. हमारे पास आपके लिए एक ही सलाह है कि अपनी चमड़ी मोटी कर लें और अपने दिमाग को खराब ना होने दें.

बहस को इग्नोर करें

जब माहौल गरम होता है तो शब्दों का वार दो धारी तलवार की तरह होता है. ये सच है कि बातों का डंक बहुत जोर से लगता है लेकिन असलियत ये है कि हर चीज आपके हाथ में है कि आप किस हद तक किसी बात को खुद को प्रभावित करने देते हैं. कल्पना कीजिएः आप किसी बहस में पड़े हैं और कोई आपसे कुछ कह रहा है, जिससे आप सहमत नहीं हैं. तो रोने या परेशान होने के बजाय अपनी सोच का एन्टीना दूसरी तरफ घूमा ले. कोई भी एक वाक्य चुन लें और उसे अपने मन में दोहराते रहें. इससे आप अपने खिलाफ कही जाने वाली बेकार की बातों से निजात पा लेंगे.

जितनी जल्दी हो सके अलग हट जाएं

कभी-कभी गरम और तनाव के माहौल से खुद को निकालना ही सबसे अच्छा इलाज है. हालांकि जब आप किसी पर गुस्सा हैं या फिर आपके आस पास का माहौल सही नहीं है तब ऐसे में शांत दिमाग से सोचना आसान नहीं होगा. तो इसलिए ऐसे मौके पर आप सिर्फ ये करें कि कहीं बाहर घूमने निकल जाएं. ऐसी जगह चुनें जहां पेड़ों, फूलों और घास के साथ बहुत सारी हरियाली हो. मानें या न मानें इससे आपको बहुत मजबूती का अहसास होगा.

कुछ तो लोग कहेंगे

ये गाना तो आपने सुना ही होगा 'कुछ तो लोग कहेंगे, लोगों का काम है कहना'... अगर सुना है तो फिर आपको ये लाइन भी याद होगी- 'क्यों बेकार की बातों में भींग जाए नैना.'

सिर्फ इतना याद रखें कि कोई भी दो लोग एक जैसे नहीं होते, न ही एक जैसे सोचते हैं. हर इंसान अलग होता है और हर स्थिति परिस्थिति के लिए उनकी अलग राय होती है. कई बार ऐसा होगा जब आपको विरोध का सामना करना पड़ेगा और वह भी जरुरी नहीं कि विनम्र तरीके से नहीं होगा. और फिर आपको ये बात भी याद रखनी होगी कि धरती पर आप अकेले प्राणी नहीं है जिसके साथ ये सब हो रहा है. तो क्या हुआ अगर कोई आपकी बातों से सहमत नहीं होता है? लेकिन इसका ये मतलब भी नहीं कि आपको दूसरों को खुश करने के लिए अपने व्यक्तित्व को ही बदलना होगा. और अगर आपको लगता है कि आप सही हैं, तो फिर आप किसी और की बात पर ध्यान ही नहीं दें. ये बात गांठ बांध कर रख लें कि किसी में भी आपको चोट पहुंचाने की ताकत नहीं है. किसी में भी नहीं मतलब, किसी में भी नहीं.

क्रोधित हों, उदास नहीं

उदासी और गुस्सा दोनों ही बहुत मजबूत और थोड़ा एक समान भावनाएं हैं. हालांकि दोनों के बीच एक बहुत ही छोटा सा अंतर है. गुस्सा कुछ समय बाद गायब हो जाता है, लेकिन उदासी साथ लटकी रहती है. असलियत तो ये है कि गुस्से की तुलना में उदासी से निपटना ज्यादा मुश्किल है. क्योंकि उदासी दूसरे बातों की यादों को बढ़ावा देती है. इसलिए अगली बार जब आप इस तरह की स्थिति में हों तो अपने आप को गुस्से में होने दें. इसके अलावा अपने गुस्से को बाहर निकालने के लिए कोई क्रिएटिव सा तरीका भी सोच लें. लेकिन खुद को चोट न पहुंचाएं.

अपनी भावनाओं को दबाएं नहीं बोलें

अपनी भावनाओं को दबाए रखने से कोई फायदा नहीं होने वाला. इसके अलावा यह आपको भावनात्मक रुप से परेशान भी करेगा. तो इसलिए अगर आप अपनी भावनाओं को स्थिर रखना चाहते हैं और अगर आप अपनी कोई राय रखते हैं, तो ये ही बेस्ट उपाय है. लड़ाई ना करें, लेकिन अपनी बात को भी कायदे से रखें. और अपने पार्टनर को भी इस बात से अवगत कराएं कि आप पर क्या बीत रही है. किसी का थोड़ा सा भी भावनात्मक सहयोग कभी बुरा नहीं करता.

बेहतरी के लिए जरूरी है तैयारी

जॉब के लिए नियोक्ता के दिमाग में पहले से तय होता है कि उसकी कंपनी के लिए कैसा कैंडिडेट चाहिए और उसमें क्या क्वालिटीज होनी चाहिए. हम आपको कुछ ऐसी क्वालिटीज के बारे में बता रहे हैं जो लगभग हर नियोक्ता देखता है.

सुमित राय

इंटरव्यू में सबसे पहले देखी जाती हैं ये क्वालिटीज, जानिए कैसे करें इसकी तैयारी लगभग हर नियोक्ता कैंडिडेट्स में देखता है ये क्वालिटीज.

किसी भी जॉब के लिए इंटरव्यू बहुत ही ज्यादा महत्वपूर्ण होता है. इंटरव्यू के दौरान ही नियोक्ता यह फैसला करता है कि कंपनी के लिए कौन सा कैंडिडेट बेहतर होगा. किसी भी जॉब के लिए नियोक्ता के दिमाग में पहले से तय होता है कि उसकी कंपनी के लिए कैसा कैंडिडेट चाहिए और उसमें क्या क्वालिटीज होनी चाहिए. हम आपको कुछ ऐसी क्वालिटीज के बारे में बता रहे हैं जो लगभग हर नियोक्ता देखता है.

1. बुद्धिमता :

कोई भी नियोक्ता सबसे पहले कैंडिडेट में बुद्धिमता की क्षमता को देखता है, क्योंकि रिसर्च का मानना है कि किसी भी व्यक्ति के 76 प्रतिशत काम की क्षमता की पहचान उसकी बुद्धिमता से हो जाती है. इसलिए इंटरव्यू के दौरान हर सवाल का जवाब इस तरह दें कि नियोक्ता को लगे कि आपको जॉब से जुड़ी हर चीज की जानकारी है.

2. टीम वर्क :

अगर आप हर काम को अकेले में करना पसंद करते हैं तो आप अपनी आदत बदल लें, क्योंकि नियोक्ता उन लोगों को जॉब देना चाहते हैं, जिनके अंदर टीम वर्क की क्वालिटी मौजूद हो. जब भी आप कोई कंपनी ज्वॉइन करते हैं, तो आपको आपको टीम के साथ मिलकर पूरा करना होता है. इसलिए इंटरव्यू में नियोक्ता यह देखता है कि आप टीम के साथ कैसे काम कर पाएंगे.

3. मल्टीटास्किंग स्किल्स :

नियोक्ता एक निर्धारित जॉब के लिए इंटरव्यू लेता है, लेकिन हमेशा वो चाहता है कि आप अपने काम के अलावा दूसरी फील्ड के काम की जानकारी भी रखते हों. इसलिए अगर आपको जॉब चाहिए तो मल्टीटास्किंग होना बेहद जरूरी है. इसलिए इंटरव्यू से पहले अपने आप को इस तरह तैयार कर लेंगे तो जॉब मिलने के चांसेस बढ़ जाएंगे.

4. कम्युनिकेशन :

नियोक्ता को हमेशा वहीं व्यक्ति पसंद आता है, जो अपनी बातों को एक्सप्रेस कर पाए. कम्युनिकेशन स्किल्स अच्छी नहीं होने पर नियोक्ता को लगता है आप ठीक से काम नहीं कर पाएंगे. इसलिए इंटरव्यू देने जाने से पहले कम्युनिकेशन स्किल्स को सुधार लें और नियोक्ता के सामने अपनी बातों को अच्छी तरह से रखें.

5. नेतृत्व क्षमता :

नए लोगों को रखने से पहले हर नियोक्ता यह जानना चाहता है कि उसकी नेतृत्व क्षमता कैसी है. नियोक्ता आपकी नेतृत्व क्षमता से यह पता लगाने की कोशिश करता है कि आपके अंदर किसी काम की जिम्मेदारी लेने की कितनी क्षमता है या नहीं. इसलिए इंटरव्यू के दौरान नियोक्ता के सामने ये पेश करें कि आप किसी प्रोजेक्ट को लीड कर सकते हैं.

हाल ही में ब्यूरो ऑफ इन्वेस्टीगेशन (एफबीआई) के डायरेक्टर के रूप में किसे नियुक्त किया गया है ?

ब्यूरो ऑफ इन्वेस्टीगेशन (एफबीआई) के डायरेक्टर के रूप में क्रिस्टोफर रे को नियुक्त किया गया है। क्रिस्टोफर रे पूर्व राष्ट्रपति जॉर्ज डब्ल्यू बुश के प्रशासन में न्याय विभाग में अपनी सेवाएं दी है। यह कॉपोर्रेट फ्रॉड की जांच में भी शामिल थे। इन्होनें ब्रिजगेट स्कैंडल में न्यू जर्सी के गवर्नर क्रिस्टी का प्रतिनिधित्व किया था तथा किंग एंड स्पालल्डिंग लॉ फर्म में व्हाइट कॉलर क्राइम के मामलों में अपनी सेवाएं दे चुके है।

फेडरेशन ऑफ इंडियन चैम्बर्स ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री (फिक्की) के महासचिव के रूप में किसे नियुक्त किया गया है ?

फेडरेशन ऑफ इंडियन चैम्बर्स ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री (फिक्की) के महासचिव के रूप में संजय बारू को नियुक्त किया गया है। इससे पहले बारू भारत के पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के मिडिया सलाहकार रह चुके है।

रॉयल एडिनबर्ग मिलिट्री टैटू क्या है ?

रॉयल एडिनबर्ग मिलिट्री टैटू एक सैन्य संगीत प्रदर्शन है, जिसमे सशस्त्र बल हिस्सा लेते है। सांस्कृतिक संबंधो और भारत की आजादी के 70 वर्ष पुरे होने पर दोनों देशों ने 2017 को ह्व भारत-ब्रिटेन इयर ऑफ कल्चरह्व घोषित किया है। हाल ही में भारतीय नौसेना दस्ता भी इसमें भाग लेगा।

हमराज क्या है ?

हमराज एक मोबाइल एप है। इस मोबाइल एप का उद्देश्य भारत के जवानों को सुविधा प्रदान करना है। इसकी सहायता से सैनिक अपनी पोस्टिंग एवं प्रमोशन की वास्तविक स्थिति का पता लगा सकते है। इसकी सहायता से सैनिक अपनी मासिक सैलरी और फॉर्म-16 देख सकते है, तथा आवश्यकता होने पर उसे डाउनलोड भी कर सकते है।

संतोष मोहन देव कौन थे ?

संतोष मोहन देव पूर्व केन्द्रीय मंत्री थे। मोहन देव पूर्व प्रधामंत्री मनमोहन सिंह के नेतृत्व वाली संप्रग-एक सरकार में भी उद्योग मंत्री थे। इन्होनें लोकसभा सांसद के रूप में पांच बार असम के सिलचर और दो बार त्रिपुरा का प्रतिनिधित्व किया था। हाल ही में इनका निधन हो गया है।

डॉ. पुष्प मित्र भार्गव कौन थे ?

डॉ. पुष्प मित्र भार्गव प्रसिद्ध वैज्ञानिक थे। भार्गव को देश में आधुनिक जीव विज्ञान के पितामह के रूप में जाना जाता है। हैदराबाद के सेंटर ऑफ सेलुलर एंड मॉलिक्यूलर बायोलॉजी (सीसीएमबी) की स्थापना में भार्गव का महत्पुर्व योगदान था। इन्हें फ्रांस के ह्यलीजन डी ऑनरह्व तथा भारत के पद्म भूषण से सम्मानित किया जा चुका है। भार्गव ने भारत में बढती असहिष्णुता में विरोध में पद्मभूषण पुरस्कार वापस लौटा दिया था। हाल ही में इनका निधन हो गया है।

हाल ही में भारत गौरव पुरस्कार से किसे सम्मानित किया गया है ?

भारत गौरव पुरस्कार से भारतीय हॉकी टीम के पूर्व कप्तान धनराज पिल्लै को सम्मानित किया गया है। पिल्लै को यह पुरस्कार हॉकी में महत्वपूर्ण योगदान के लिए दिया गया है। भारत गौरव पुरस्कार ईस्ट बंगाल क्लब का सर्वोच्च पुरस्कार है। वर्तमान में पिल्लै भारतीय हॉकी टीम के प्रबंधक और भारतीय हॉकी फेडरेशन की अनौपचारिक (एडहॉक) समिति के सदस्य भी है। पिल्लै 1994 के हॉकी विश्व के दौरान वर्ल्ड इलेवन में शामिल होने वाले एकमात्र खिलाडी थे।

चेतेश्वर पुजारा का संबंध किस खेल से है ?

चेतेश्वर पुजारा का संबंध क्रिकेट से है। पुजारा भारतीय क्रिकेट टीम में बल्लेबाज के तौर पर खेलते है। हाल ही में इन्होनें टेस्ट कॅरिअर में 4000 रन पूरे कर लिए हैं। पुजारा ऐसा करने वाले भारत के 15वें बल्लेबाज बन गए है।

देवेंद्र झाझरिया का संबंध किस खेल से है ?

देवेंद्र झाझरिया का संबंध भाला फेंक से है। देवेंद्र डॉ बार के पैरालिंपिक स्वर्ण पदक विजेता है। झाझारिया रियो ओलिंपिक में एंथेस पैरालंपिक में भी गोल्ड मेडल जीत चुके है। हाल ही में देवेंद्र को इस वर्ष के राजीव गाँधी खेल रत्न पुरस्कार के लिए चुना गया है।

हाल ही में आदि पेरुक्कू उत्सव कहां पर मनाया जा रहा है ?

पेरुक्कू उत्सव आदि पेरुक्कू उत्सव मनाया जा रहा है। यह उत्सव जल के सम्मान में मनाया जाता है। आदि पेरुक्कू उत्सव मूलरूप से तमिल उत्सव है। यह तमिल महीने आदि के 18वें दिन मनाया जाता है। यह उत्सव जल के जीवन प्रदान करने वाले गुणों के सम्मान में मनाया जाता है।

प्यार वो बीज है...

प्यार कभी इकतरफा होता है, न होगा
दो रूहों के मिलन की जुड़वां पैदाईश है ये
प्यार अकेला नहीं जी सकता
जीता है तो दो लोगों में
मरता है तो दो मरते हैं

प्यार इक बहता दरिया है
झील नहीं कि जिसको किनारे बाँध के बैठे रहते हैं
सागर भी नहीं कि जिसका किनारा नहीं होता
बस दरिया है और बह जाता है.

दरिया जैसे चढ़ जाता है ढल जाता है
चढ़ना ढलना प्यार में वो सब होता है
पानी की आदत है उपर से नीचे की जानिब बहना
नीचे से फिर भाग के सूरत उपर उठना
बादल बन आकाश में बहना
कांपने लगता है जब तेज हवाएँ छेड़े
बूँद-बूँद बरस जाता है.

प्यार एक ज़िस्म के साज पर बजती गूँज नहीं है
न मन्दिर की आरती है न पूजा है
प्यार नफा है न लालच है
न कोई लाभ न हानि कोई
प्यार हेलान हैं न एहसान है.

न कोई जंग की जीत है ये
न ये हुनर है न ये इनाम है
न रिवाज कोई न रीत है ये
ये रहम नहीं ये दान नहीं
न बीज नहीं कोई जो बेच सके.

खुशबू है मगर ये खुशबू की पहचान नहीं
दर्द, दिलासे, शक, विश्वास, जुनूं,
और होशो हवास के इक अहसास के कोख से पैदा हुआ
इक रिश्ता है ये
यह सम्बन्ध है दुनियारों का,
दुरमाओं का, पहचानों का
पैदा होता है, बढ़ता है ये, बूढा होता नहीं
मिटटी में पले इक दर्द की ठंढी धूप तले
जड़ और तल की एक फसल
कटती है मगर ये फटती नहीं.

मट्टी और पानी और हवा कुछ रौशनी
और तारीकी को छोड़
जब बीज की आँख में झांकते हैं
तब पौधा गर्दन ऊँची करके
मुंह नाक नजर दिखलाता है.

पौधे के पत्ते-पत्ते पर
कुछ प्रश्न भी है कुछ उत्तर भी
किस मिट्टी की कोख से हो तुम
किस मौसम ने पाला पोसा
औ' सूरज का छिड़काव किया.

किस सिम्त गयी साखें उसकी
कुछ पत्तों के चेहरे उपर हैं
आकाश के जानिब तकते हैं
कुछ लटके हुए गमगीन मगर
शाखों के रगों से बहते हुए
पानी से जुड़े मट्टी के तले
एक बीज से आकर पूछते हैं.

हम तुम तो नहीं
पर पूछना है तुम हमसे हो या हम तुमसे
प्यार अगर वो बीज है तो
इक प्रश्न भी है इक उत्तर भी.

ऐसा नहीं है गोआ

गोआ के बारे में कई भ्रांतियां लोगों में फैली हुई हैं. मेरे वहां जाने से पहले भी कुछ इसी तरह की बातें जहन में थीं, लेकिन जाकर कुछ अलग ही अनुभव हुआ.

श्रुति दीक्षित

भारतीयों के लिए गोआ हमेशा चर्चा का विषय रहता है. चाहें हनीमून डेस्टिनेशन हो या फिर यंगस्टर्स के लिए मस्ती की जगह.. गोआ है तो कमाल की जगह. पर उतनी ही चर्चा गोआ प्लानिंग की भी होती है जो किस्मतवालों की ही सफल हो पाती है. ये सिर्फ मेरे लिए नहीं बल्कि मेरे जैसे उन सभी लोगों के लिए है जिनका गोआ का प्लान कम से कम एक बार तो कैंसिल हुआ ही है.

मेरे कुछ जानने वाले तो ऐसे हैं जिन्होंने गोआ के लिए इतनी प्लानिंग कर ली है जितनी शायद शादी की भी नहीं की होगी. गोआ के बारे में ये बात फेमस है कि वहां जाने का प्लान एक ना एक बार कैंसिल जरूर होता है. खैर, ये तो हुई एक बात, लेकिन गोआ जाने की तैयारी कर रहे लोगों को वहां से जुड़ी कुछ बातें जरूर पता होनी चाहिए. गोआ के बारे में कई भ्रांतियां लोगों में फैली हुई हैं. मेरे वहां जाने से पहले भी कुछ इसी तरह की बातें जहन में थीं, लेकिन जाकर कुछ अलग ही अनुभव हुआ.

गोआ सेफ है...

गोआ कुछ हिस्सों में सेफ है यकीनन, लेकिन यहां भी बात आती है कि आप कहां हैं. 5 लड़कियों के ग्रुप को अगर एक ही दिन में तीन बार छेड़ा गया तो इसे सेफ कहना तो सही नहीं होगा. फर्क सिर्फ इतना था कि हम किसी दूर के बीच घूमना चाहते थे जहां ज्यादा भीड़ ना हो. ऐसी हरकतें करने वाले टूरिस्ट ही थे.

आरम्बोल बीच और स्वीट लेक विदेशी टूरिस्ट के बीच खासा लोकप्रिय है. वहां मड बाथ (नैचुरल) से लेकर मीठे पानी का तालाब, समुद्र, झरना सब है. जगह इतनी सुंदर है कि मानो किसी फिल्म का सेट हो, लेकिन अगर आप अकेले हैं तो यहां ना ही जाएं तो बेहतर है. रास्ता जंगलों से होकर जाता है. कई टूरिस्ट गाहे-बगाहे वहां आपको मिल जाएंगे और कम लोग होने के कारण विदेशी महिला टूरिस्ट आराम से यहां घूमते हैं. लोकल लोग आपको शराब से लेकर ड्रग्स तक सब कुछ ऑफर कर सकते हैं. बेहतर यही होगा कि या तो अपने गाइड को साथ ले जाएं या अपने होटल से किसी को लेकर जाएं. अकेले ना ही जाएं.

लाउडस्पीकर और शराब पर रोक

हाईवे पर अलबत्ता शराब की दुकाने नहीं दिखें, लेकिन आपको राज्य के हर कोने में किसी भी वक्त शराब मिल जाएगी. बाघा बीच पर हर रात 3 बजे तक किसी कार्निवल जैसा माहौल रहता है. भले ही कोई कुछ भी कहे कि बीच पर बैठकर शराब पीना गैरकानूनी है, लेकिन ऐसा है लागू तौर पर कोई नियम नहीं है.

फैमिली बीच पर जहां बहुत भीड़ होती है वहां भी लोग बैठकर दारू पीते हैं. आलम ये है कि लाइफ गार्ड्स और पुलिस वाले ये बोलते हैं कि बोतल आप ऊपर कचरे के डिब्बे में डाल दीजिएगा. सिर्फ अगर बाघा बीच को छोड़ दिया जाए तो भी लगभग हर बीच का यही हाल है. आपको याद दिला दूं कि मई में ही ये खबर आई थी कि पब्लिक प्लेस पर गोआ में शराब पीना मना है.

गोआ में सभी खुले विचारों वाले हैं...

अगर आपको लगता है कि गोआ में क्योंकि विदेशी टूरिस्ट ज्यादा आते हैं और वहां शराब, नाच-गाना, फैशन, डिस्को आदि सब होता है तो लोगों की धारणा भी मॉर्डन होगी, तो जान लीजिए ऐसा नहीं है. ये साफ तौर पर आपके दिमाग में डाली गई गलत बात है. गोआ के कुछ खास स्पॉट और उसके आस-पास के इलाकों को छोड़ दिया जाए तो थोड़ा दूर दराज के गावों में लोगों की मानसिकता उतनी मॉर्डन नहीं है जितनी दिखती है. यहां तक की लोग काफी कट्टर भी मिल सकते हैं. इतने की अगर आपको उनसे बात करते समय समझ आ जाएगी. चाहें भले ही आप उनसे रास्ता पूछने के लिए बात कर रहे हों. रास्ता बताते-बताते कपड़ों से लेकर उनके तौर तरीके तक सब कुछ वो आपको समझा देंगे.

बेस्ट सीजन सर्दियों में है...

ऐसा तो बिलकुल नहीं है. गोआ जाने का बेस्ट सीजन सर्दियों में है ऐसा बिलकुल नहीं है. भले ही बारिश में गोआ में वॉटर स्पोर्ट्स बंद रहते हों, लेकिन बीच की असली खूबसूरती तो गोआ में बारिश में ही मिलेगी. साथ ही टैन होने का खतरा भी नहीं रहेगा. हां, हाईटाइड के समय समुद्र से थोड़ा दूर रहने में ही भलाई है.

गोआ में शराब इतनी सस्ती है कि लोग गिफ्ट करने के लिए शराब गोआ से लेकर आते हैं, लेकिन फिर भी वहां हर कोई शराबी नहीं है और ना ही लोग दिन के हर वक्त शराब पीते रहते हैं. ऐसा टूरिस्ट के लिए जरूर कहा जा सकता है, लेकिन वहां रहने वाले लोगों की अपनी अलग ही दुनिया है. एक बात ध्यान रखिएगा की फिल्मों जैसे खाली और साफ बीच गोआ में ढूंढने के लिए आपको काफी मेहनत करनी पड़ेगी. गोआ के सभी फेमस बीच मुंबई के जूहू बीच की तरह ही भीड़ भाड़ वाले हैं.

ऐसे कम होगा इंफेक्शन का खतरा

मॉनसून की दस्तक के साथ ही बीमारियों के प्रकोप का खतरा भी बढ़ गया है। डॉक्टरों ने खासकर बच्चों के लिए सलाह दी है कि उन्हें ज्यादा से ज्यादा विटमिन सी से भरपूर आहार खिलाना चाहिए ताकि इस मौसम में शरीर में संक्रमित कोशिकाओं यानी इंफेक्टेड सेल्स को खत्म करने में मदद मिल सके। विटमिन सी को प्रतिरक्षा प्रणाली के लिए बेहतरीन माना जाता है।

दिल्ली के सरोज सुपर स्पेशिऐलिटी हॉस्पिटल में इंटरनल मेडिसिन विभाग के प्रमुख एस के मुंधरा ने कहा, "रोजाना कम से कम 500 मिलीग्राम विटमिन सी का सेवन करने की सलाह दी जाती है क्योंकि यह प्रतिरक्षा में सुधार, कॉमन कोल्ड फ्लू और संक्रमण की गंभीरता और उसकी अवधि को कम करता है। लेकिन याद रखना चाहिए कि यह मात्रा रोजाना 1 हजार मिलीग्राम से अधिक न हो क्योंकि किसी भी चीज की अति हानिकारक होती है।" मुंधरा ने कहा कि मॉनसून की शुरूआत से लेकर अब तक वह संक्रमण से ग्रस्त 200-250 मरीजों को देख चुके हैं। उन्होंने कहा कि अगर कोई व्यक्ति विटमिन सी से भरपूर आहार लेता रहे, तो उनका प्रतिरक्षा तंत्र अच्छे तरीके से काम करता है और इंफेक्टेड सेल्स को ढूंढकर उन्हें नष्ट करता है। एम्स के अधिकारियों के मुताबिक, हर साल मॉनसून में जनरल मेडिसिन ओपीडी में संक्रमण से ग्रस्त मरीजों की संख्या में 20-30 फीसदी तक का इजाफा होता है। तो वहीं शहर के गंगा राम अस्पताल में भी मॉनसून के दौरान 20-30 फीसदी मरीज त्वचा से संबंधित संक्रमण के आते हैं।

साइट्रस फ्रूट्स जैसे- संतरा, मौसंबी, अंगूर, किवी, स्ट्रॉबरी, आंवला और अमरूद में विटमिन सी की भरपूर मात्रा पायी जाती है। इसके अलावा सब्जियों की बात करें तो बेल पेपर यानी लाल-पीली और हरी शिमला मिर्च, ब्रॉकली, टमाटर, गोभी और पालक में भी विटमिन सी प्रचूर मात्रा में पाया जाता है। लिहाजा मॉनसून के सीजन में किसी भी तरह के इंफेक्शन से बचने के लिए इन चीजों का सेवन करना चाहिए।

ख्याल रखने की जरुरत है

बारिश की बूंदें, सुहाना मौसम और गर्मा गर्म पकौड़ों के अलावा कुछ और भी है जो इस मौसम में मिलता है और वह है इंफेक्शन और बीमारियां। लिहाजा मॉनसून में आप बीमार न पड़ें और इस मौसम का अच्छी तरह से मजा उठा सकें इसके लिए इन बातों का ध्यान रखें...

शरीर को साफ रखें

इन दिनों शरीर की साफ-सफाई का ज्यादा ध्यान रखें। जितना मुमकिन हो, शरीर को सूखा और फ्रेश रखें। बारिश में बार-बार भीगने से बचें। ऐंटिबैक्टीरियल साबुन से दिन में 2 बार नहाएं। बारिश में भीगने के बाद साफ पानी में डिसइंफेक्टेंट (डिटॉल, सैवलॉन आदि) मिलाकर अच्छी तरह नहाएं। दूसरों का तौलिया या साबुन शेयर न करें। बाहर से आकर हाथों को साबुन से अच्छी तरह से धोएं। खाना खाने से पहले भी हाथ जरूर धोएं।

बाहर का खाना न खाएं

इस मौसम में खाने में बैक्टीरिया जल्दी पनपता है। बाहर जाकर पानी पूरी, भेल पूरी, चाट, सैंडविच आदि खाने से बचें। कटे फल और सब्जियां खाने से भी इंफेक्शन का खतरा रहता है लिहाजा इनसे भी बचें। बाहर का जूस या पानी भी न पिएं। इस दौरान तेल-भुने खाने के बजाय हल्का खाना खाने की आदत डालें, जो आसानी से पच सके क्योंकि बरसात में गैस, अपच जैसी पेट की समस्याएं ज्यादा होती हैं। अपने पाचन तंत्र को बेहतर बनाने के लिए लहसुन, काली मिर्च, अदरक, हल्दी और धनिया का सेवन करें। बासी खाना खाने से भी बचें।

सब्जियों को अच्छी तरह धोएं

फल और सब्जियों को अच्छी तरह से धोएं खासकर पत्तेदार सब्जियों को क्योंकि इस मौसम में उनमें कई तरह के लार्वा और कीड़े होते हैं। हल्के गर्म पानी से सब्जी और फलों को धोएं, फिर उन्हें आधे घंटे तक नमक मिले पानी में भिगोकर रखें। सब्जियों को पकाने से पहले 5 मिनट उबाल लें तो और भी अच्छा है। इससे कीटाणु तो खत्म होंगे ही, फल-सब्जियों पर लगे आर्टिफिशल कलर और केमिकल भी हट जाएंगे। इसके अलावा सब्जियों को अच्छी तरह पकाएं। कच्चा या अधपका खाने का मतलब है कि आप

बीमारियों को दावत दे रहे हैं।

पानी उबाल कर पिएं

मॉनसून में सिर्फ फिल्टर्ड और उबला हुआ पानी ही पिएं। ध्यान रखें कि पानी को उबाले हुए 24 घंटे से ज्यादा न हो। अपने फ्रिज की बोतलों को बदलने और हर तीसरे-चौथे दिन साफ करने की आदत डालें। इस मौसम में कई बार प्यास नहीं लगती फिर भी दिन में 8-10 गिलास पानी जरूर पिएं वरना शरीर में पानी की कमी हो सकती है।

हवादार कपड़े पहनें

मॉनसून में ढीले, हल्के और हवादार कपड़े पहनें। टाइट और ऐसे कपड़े न पहनें, जिनका रंग निकलता हो। ध्यान रखें कि कपड़े धोते हुए उनमें साबुन न रह जाए वरना स्किन इंफेक्शन हो सकता है। अगर बारिश में कपड़े भीग गए हैं तो फौरन बदल लें ताकि सर्दी-जुखाम न हो।

घर को साफ-सुथरा रखें

बारिश के दिनों में मक्खी-मच्छर तेजी से पनपते हैं। ऐसे में घर को पेस्ट फ्री बनाना जरूरी है। कॉकरोच, मक्खी-मच्छर आदि को दूर रखने के लिए घर में पेस्ट कंट्रोल वाला स्प्रे कराएं। खिड़कियों पर जाली लगवाएं ताकि बाहर से कीट अंदर न आ सकें। बालकनी या छत आदि पर पानी जमा न होने दें, वरना मच्छर पैदा हो सकते हैं और मलेरिया या डेंगू फैल सकता है। घर में कपूर जलाएं, इससे मक्खियां दूर भागती हैं।

भुला दिया

मोहम्मद शहजाद

डेफलंपिक को इससे पूर्व कितने लोग जानते थे? ईमानदारी से कहा जाए तो बहुत कम लोग. हमें और आपको ये कबूल करने में कोई हर्ज नहीं होना चाहिए कि डेफलंपिक अर्थात बधिर ओलंपिक के बारे में जानना तो बहुत दूर, अधिकतर लोगों ने इसका नाम भी नहीं सुना होगा. तुर्की के सामसून शहर में आयोजित डेफलंपिक-2017 में शानदार प्रदर्शन कर लौटे भारतीय दल ने अगर दिल्ली एयरपोर्ट पर अपना विरोध न जताया होता तो शायद हर बार की तरह इस बार भी उन्हें भुला दिया गया होता. उन्हीं की तरह इस ओलंपकि में हासिल की गई उनकी शानदार उपलब्धियां भी लोगों को पता नहीं चलतीं.

दरअसल अपने स्वागत में सरकार, खेल मंत्रालय और खेल प्राधिकरण के किसी अधिकारी को न पाकर बधिर ओलंपिक खिलाड़ियों और उनके सपोर्ट स्टॉफ ने इंदिरा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे से निकलने से इंकार कर दिया. नतीजतन उनके इस विरोध-प्रदर्शन की खबर ने बधिर ओलंपिक-2017 के खेल प्रदर्शन से ज्यादा सुर्खियां बटोरीं और वो पलभर में लोगों के दिलो-दिमाग में छा गए. हर किसी को उनसे सहानुभूति हुई और मीडिया-सोशल मीडिया में उनके समर्थन में लोग आ गए.

अजीब बात है कि जिन खिलाड़ियों को उनके खेल प्रदर्शन की वजह से पहचाना जाना चाहिए था, लोग उन्हें उनके विरोध-प्रदर्शन के बाद जानने को मजबूर हुए. बधिर ओलंपिक और उसके खिलाड़ियों के प्रति अज्ञानता के लिए जितने हम कसूरवार हैं, उससे कहीं अधिक हमारी सरकारें और मीडिया जिम्मेदार है.

दुर्भाग्यवश उनके साथ ये अनदेखी तब हुई है जब बधिर ओलंपिक खेलों में ये किसी भी भारतीय दल का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन है. डेफलंपिक के इस २३वें संस्करण में भारत की तरफ से गया ४६ सदस्यीय दल कुल पांच पदक जीतकर लौटा है. इसमें से विरेन्द्र सिंह ने ७४ किलोग्राम की फ्रीस्टाइल कुश्ती में स्वर्ण पदक जीतकर देश का नाम रौशन किया है तो वहीं कुश्ती में ही अजय कुमार और सुमित दहिया ने कांसे का तमगा जीता है. इसके अतिरिक्त दीक्षा डागर ने गोल्फ में रजत तो वहीं पृथ्वी सरकार और जाफरीन शेख की जोड़ी ने पुरूषों के युगल मुकाबले में कांसे का मेडल हासिल किया.

उनके इस प्रदर्शन का अगर 2016 के रियो ओलंपिक में भारतीय दल से तुलना की जाए तो हमारे बधिर खिलाड़ियों का प्रदर्शन काफी बेहतर रहा है. बधिर ओलंपिक में गए 46 सदस्यीय दल में खिलाड़ियों के अलावा सपोर्टिंग स्टॉफ भी था. इन खिलाड़ियों में महज 8 खेलों में अपना हाथ आजमाया और उनकी झोली में पांच मेडल आए जबकि ओलंपिक में गए भारतीय दल में केवल खिलाड़ियों की संख्या 117 थी और उन्होंने 15 मैदानों में अपना भाग्य आजमाया लेकिन उनके हाथ महज दो मेडल लगे. इसमें एक पीवी संधू ने बैडमिंटन में रजत तो दूसरा साक्षी मलिक ने कुश्ती में कांसे का तमगा दिलवाया. इसके बरक्स शारीरिक रूप उनके कम दक्ष खिलाड़ियों ने पैरालंपिक में 4 पदक दिलवाया.

ओलंपिक खेलों में भारत की ये दुर्दशा कोई पहली बार नहीं हुई है बल्कि 1920 में जब से हमने इसमें अपना दल भेजना शुरू किया है महज दो दर्जन मेडल ही हमारी झोली में आए हैं. इनमें नौ गोल्ड मेडल शामिल हैं लेकिन हमें स्वर्ण पदकों की इस संख्या पर ज्यादा इतराने की जरूरत नहीं है क्योंकि इनमें से आठ भारतीय हाकी टीम की देन हैं. वो भी तब जब वो दौर भारतीय हॉकी का स्वर्णिम युग था. दीगर अकेला स्वर्ण पदक अभिनव बिंद्रा ने बीजिंग ओलंपिक में शूटिंग में जीता था. अर्थात लगभग एक सदी बीतने के बावजूद भी हमारे प्रदर्शन में कोई सुधार नहीं है.

इससे जाहिर होता है कि हमारे दिव्यांग खिलाड़ियों का प्रदर्शन ओलंपिक खिलाड़ियों से कहीं बेहतर है. इसके बावजूद बधिर खिलाड़ियों की उपेक्षा की गई और खेल मंत्रालय तथा भारतीय खेल प्राधिकरण (साई) की तरफ से कोई अधिकारी एयरपोर्ट पर उनके स्वागत के लिए नहीं गया. उनकी ये उपेक्षा तब की गई है जब उन्होंने गत २५ जुलाई को ही ई-मेल के माध्यम से १ अगस्त को वतन वापसी की सूचना दे दी थी. खिलाड़ियों इंटरप्रेटर और प्रोजेक्ट ऑफिसर केतन शाह का कहना है कि हमने साई के महानिदेशक और खेल मंत्री से संपर्क साधने की कोशिश की लेकिन किसी ने भी हमारी तरफ ध्यान नहीं दिया.

काबिलेजिक्र है कि इससे पहले रियो पैरालंपिक में तैराकी में रजत पदक जीतने वाली चंद्रमाला पांडे को इसमें हिस्सा लेने के लिए बर्लिन की सड़कों पर पैसों के लिए भीख मांगने के लिए विवश होना पड़ा था. फिर २०११ में ली गई भारतीय महिला कबड्डी टीम की उन तस्वीरों को कौन भूल सकता है जब विश्व चैम्पियनशिप जीतकर हाथ में ट्रॉफी लिए सड़क पर ऑटो रिक्शा के इंतजार में खड़ी थीं.

सरकारी उपेक्षा और लापरवाही तो खैर कोई नई बात नहीं है लेकिन असल चूक मीडिया से हुई है जिसे स्वीकारने में कोई बुराई नहीं है. इनके जरिए उन्हें उतना महत्व नहीं दिया गया जिसके वह हकदार थे. कम से कम उस समय तो जरूर इन खिलाड़ियों को कवरेज देनी चाहिए थी जब ये डेफलंपिक-2017 में पदक जीत रहे थे. जाहिर है कि इससे लोगों को उनके नाम और काम, दोनों की जानकारी होती. मगर ये तल्ख सच्चाई है कि वो सुर्खियों में तभी आए जब उन्होंने एयरपोर्ट से जाने को मना कर दिया.

ओलंपिक में हमारे खराब प्रदर्शन को देखते हुए एक तरफ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की पहल पर टास्क फोर्स का गठन किया गया है तो वहीं दूसरी तरफ उनकी सरकार के अधीन मंत्रालयल और भारतीय खेल प्राधिकरण ही उनकी इस योजना को पलीता लगाने पर तुले हैं. बार-बार होने वाली ऐसी उपेक्षाओं के बाद भला कौन खेलों में अपना भविष्य बनाना चाहेगा? और फिर जब तक लोग किसी खेल में उतरेंगे नहीं तो उसे जीतेंगे कैसे? हमें चाहिए कि क्रिकेट की तरह ही अन्य खेलों और उनके खिलाड़ियों को भी प्रोत्साहन दें ताकि वो भी अपने-अपने खेलों में देश का नाम रौशन कर सकें.

'दूसरा धोनी'

विराट कोहली ने जो कहा था वो हो रहा है. जी हां, टीम इंडिया को दूसरा धोनी मिल चुका है. जो मुश्किल घड़ी में भी टीम इंडिया के लिए चट्टान की तरह खड़ा है.

मोहित चतुर्वेदी

टीम इंडिया की टेस्ट टीम से धोनी के जाने के बाद लग रहा था कि उनका स्थान कोई नहीं भर पाएगा. उनकी जैसी बल्लेबाजी कोई नहीं कर पाएगा. लेकिन कोहली के एक कदम से ये सारी बातें झूठी साबित हुईं. कोहली ने एक खिलाड़ी पर भरोसा जताया और वो खिलाड़ी खरा साबित हुआ. हार्दिक पांड्या ने हर मौके पर ये साबित कर दिया कि वो ही ऐसे खिलाड़ी हैं जो धोनी के स्थान को भर सकते हैं.

श्रीलंका के खिलाफ धोनी के स्थान पर खेलते हुए उन्होंने धमाल मचा दिया. मैच में आंधी की तरह आए और तीसरे टेस्ट में तूफान की तरह श्रीलंका को उजाड़ दिया. उन्होंने पल्लेकले टेस्ट के दूसरे दिन शानदार बल्लेबाजी का मुजाहिरा पेश किया और 86 गेंदों में शतक लगाते हुए इतिहास रच दिया.

यह भारत की ओर से टेस्ट क्रिकेट के इतिहास में लगाया गया पांचवां सबसे तेज शतक है. हार्दिक पांड्या इस मैच में आठवें नंबर पर बल्लेबाजी करने आए थे और नंबर 8 पर बल्लेबाजी करते हुए भारत की ओर से टेस्ट में यह सबसे तेज शतक है.

पांड्या पर ज्यादा भरोसा

कोहली की कप्तानी में चैम्पियंस ट्रॉफी में टीम इंडिया फाइनल तक पहुंची थी. पूरे टूर्नामेंट में कोहली ने धोनी से ज्यादा पांड्या पर भरोसा जताया था. पहले ही मुकाबले में कोहली ने धोनी को बल्लेबाजी न कराते हुए पांड्या पर भरोसा जताया था. वो भी उस वक्त जब आखिरी में चौके-छक्कों की जरूरत थी. पाकिस्तान के खिलाफ आखिरी में उतरकर पांड्या ने मात्र 6 गेंदों में 20 रन ठोक डाले थे जिसमें 3 छक्के शामिल थे. जिसके बाद कोहली ने यह तक कह दिया था कि धोनी से ज्यादा तेज पांड्या की बल्लेबाजी है क्योंकि वो आते ही ताबड़तोड़ शॉट खेलना शुरू कर देते हैं.

कोहली ने खेला बड़ा दांव

धोनी की जगह भर पाना बहुत मुश्किल काम था. टेस्ट में धोनी की परफॉर्मेंस शानदार रही है. ऐसे में उनका स्थान भरना कोहली के लिए मुश्किल काम था. लेकिन पांड्या की तूफानी बल्लेबाजी को देखते हुए कोहली की ये टेंशन भी खत्म हो गई. अब वो धोनी की जगह पांड्या पर ज्यादा भरोसा करने लगे. करना भी जरूरी है, क्योंकि टीम इंडिया का पूरा फोकस 2019 वर्ल्ड कप पर है और शास्त्री-कोहली की जोड़ी ने अभी से वर्ल्ड कप की तैयारी शुरू कर दी है. इसके लिए वो हर खिलाड़ी पर फोकस किए हुए हैं. एक समय था जब टीम इंडिया का मिडिल ऑर्डर ठीक नहीं था. तू चल मैं आया वाली कहानी चला करती थी, लेकिन अब ऐसा बिलकुल नहीं है. भले ही टीम इंडिया का टॉप ऑर्डर फ्लॉप हो जाए. पर मिडिल ऑर्डर दीवार समान खड़ा रहता है.

कुल मिलाकर टीम इंडिया को दूसरा धोनी मिल चुका है. जो बॉलिंग और बल्लेबाजी दोनों ही करता है. मैच फिनिशिंग पारी खेलने में भी काबिल है. कोहली ने भविष्यवाणी की थी कि पांड्या टीम इंडिया के लिए इक्का साबित होगा. और अब बिलकुल ऐसा ही हो रहा है.

वास्तु में सूर्य महत्वपूर्ण है

फेंग शुई का एक सिद्धांत है, कि जहां समस्या है वहां उसका समाधान भी है। वास्तु शास्त्र के सिद्धांत पूर्णतः वैज्ञानिक आधार पर बने हैं। इस बात की पुष्टि हम कुछ वास्तु सिद्धांतों के विश्लेषण से कर सकते हैं।

पूर्व दिशा में आंगन

घर का आंगन पूर्व दिशा में बनाना चाहिए। ताकि सूर्य की जीवनदायी प्रातः कालीन किरणों का अधिक से अधिक लाभ आपको मिल सके, और प्रातः काल धूप स्नान किया जा सके।

दीवारें ऊंची व मोटी होनी चाहिए

प्रातः कालीन सूर्य की किरणें तो लाभदायक होती हैं परंतु दोपहर के समय जब सूर्य पश्चिम दिशा में ज्यादा तेज गर्मी फैला रहा होता है तब उस समय सूर्य की किरणें हानिकारण होती है। उन हानिकारक किरणों के संपर्क में हम कम से आएं, इस कारण वास्तुशास्त्र में दक्षिण-पश्चिम दिशा में ऊंची व मोटी दीवार बनाने की सलाह दी जाती है।

पूर्व दिशा में पेड़

घर के पूर्व एवं ईशान दिशा में बड़ी शाखा एवं मोटी पत्तियों वाले बड़े पेड़ को नहीं लगाना चाहिए। यह पेड़ प्रातःकालीन सूर्य की सकारात्मक किरणों को घर में प्रवेश करने में रुकावट पैदा करते हैं।

ईशान कोण में पानी

ईशान कोण में स्थित पानी के स्त्रोत पर पड़ने वाली प्रातःकालीन सूर्य की किरणें पानी में पैदा होने वाले हानिकारक वैक्टीरिया और कीटाणुओं आदि को नष्ट करती हैं। विज्ञान ने भी स्वीकार किया है कि सूर्य की किरणों में यह शक्ति होती है।

आग्नेय कोण में रसोईघर

आग्नेय कोण में स्थित रसोई घर में पूर्व दिशा से प्रातः कालीन सूर्य किरणें प्रवेश करती हैं। जो रसोई में पैदा होने वाले हानिकारण वैक्टीरिया एवं कीटाणुओं को नष्ट कर देती हैं।

पौधे लाएंगे घर में खुशहाली

फेंगशुई में पौधों को नौ आधारभूत सुरक्षा सावधानियों में से एक माना गया है, इसलिए घर के खाली हिस्सों में पौधे लगा देना चाहिए।

चढ़ने वाली बेलें जिन्हें क्लाइंबर्स कहा जाता है जैसे- मनी प्लांट को कोने में लगाकर उस जगह की उदासीनता को कम किया जा सकता है।

घर के दक्षिण-पूर्व कोने को धन और समृद्धि का कोना माना जाता है इसलिए यहां चौड़े पत्तियों वाले पौधे लगाना चाहिए।

मुरझाए हुए या सूख गए पौधों को तुरंत हटा देना चाहिए, क्योंकि इससे नकारात्मक ऊर्जा फैलती है।

घर के सामने वाले हिस्से में कांटेदार या नुकीले पत्तों वाले पौधे नहीं लगाना चाहिए। वे नकारात्मक ऊर्जा को सहयोग करते हैं।

ये पौधे न सिर्फ आपके घर को बल्कि आपके जीवन को भी महकाते हैं और सबसे बड़ी बात कि इन्हें फॉलो करना बहुत कठिन भी नहीं है।

ध्यान की गहराई

मानसिक शांति के लिए
ध्यान बहुत ही अच्छा
विकल्प है.
इसका नियमित अभ्यास
करना जरूरी है.

शारीरिक स्वास्थ्य और मानसिक शांति के लिए ध्यान बहुत ही अच्छा विकल्प है, इसका नियमित अभ्यास करना जरूरी है। लेकिन कभी-कभी हमारे मन में चलने वाले उल्टे-सीधे विचारों के कारण सही तरह से लोग ध्यान नहीं कर पाते हैं। ऐसे स्थिति में जब भी कोई ध्यान करता है तो मन भटक जाता है। इसे सही से करने के लिए जरूरी है कि आप ध्यान की गहराई में जाएं। इससे आपके विचार नियंत्रण में रहेंगे और आपको शांति का अनुभव होगा।

तय करें...

1. ध्यान करने के लिए आपको ऐसी जगह चुननी चाहिए जहां कोई डिस्टर्बेंस ना हो यानी जहां का वातावरण शांत हो।
2. ध्यान के लिए हमेशा चटाई का प्रयोग करना चाहिए। इस पर आपको नींद नहीं आएगी और 20 से 30 मिनट तक आप ध्यान कर पाएंगे।
3. दिमाग को आराम देने के लिए हल्का सफेद या पीला प्रकाश काफी अच्छा होता है। इसलिए लाइट की जगह आप मोमबत्ती, दिया या फिर लैंप उपयोग में ला सकते है।
4. ध्यान हमेशा सुबह के समय करें। अगर शाम को करते हैं तो ध्यान ये रहे कि बीच में इस कार्य को न छोड़ें।
5 हमेशा पॉजिटिव रहें। नकारात्मक बातों से दूरी बनाए रखें।

कैसे करें

1. ध्यान करने के लिए चटाई पर बैठे। आपको 20 से 30 मिनट तक बैठना है इसलिए आप पहले अपने कमर की थोड़ी स्ट्रेचिंग भी कर सकते है। इसके लिए कमर को दाये और बाये मोड़ ले। जिससे बॉडी में खिचाव होगा और तनाव दूर होगा। जानिए मैट पर ध्यान करने के फायदे क्या है
2. जो लोग आंखे बंद करके ध्यान लगाते है उन्हें नींद आने का डर रहता है। और आंखे खोलकर ध्यान करने वालो को यह कठिन लगता है। इसके लिए एकटक खाली दीवार पर ध्यान केंद्रित करे। अगर आवश्यकता हो तो पलक झपका सकते है।
3. 8 से 10 सेकंड तक गहरी लम्बी सांसे ले। इसे 2 से 4 सेकेंड तक रोक कर रखे। और इसे फिर 8 से 10 तक गिनते हुए छोड़ें। 2 मिनट तक इस प्रक्रिया को दोहराये। इसमें साँस लेने और छोड़ने का अनुभव करे। बंद आंखों से भी देखने का प्रयास करे।

स्वतंत्रता दिवस

की हार्दिक बधाई

शुभकामनाएं..

जरनैल सिंह भाटिया

जिला अध्यक्ष, राजनांदगांव

जनता कांग्रेस छत्तीसगढ़-जे

युवा नेतृत्व के
3 वर्ष

युवा संकल्प, अटूट प्रयास राजनांदगाँव ने रचा इतिहास

लोकसभा क्षेत्र राजनांदगाँव के विकास में राज्य सरकार की सहभागिता*

स्कूल शिक्षा	₹ 39.59 करोड़
नगरीय विकास	₹ 24.78 करोड़
उच्च शिक्षा एवं तकनीकी शिक्षा	₹ 24.30 करोड़
अन्य विकास कार्य	₹ 28.00 करोड़
पशुधन विकास	₹ 23.51 करोड़
विशेष पिछड़ी जनजाति विकास	₹ 22.97 करोड़
विकास प्राधिकरणों के कार्य	₹ 15.51 करोड़

कुल
₹ 178.66 करोड़ *
*विगत तीन वर्षों में मुख्य क्षेत्रों में